ऋग्वेद

ओ३म्

यजुर्वेद

स्वाधीनता विशेषांक

पवमान

(मासिक)

मूल्यः ₹ 20

वर्ष : 30 श्रावण-भाद्रपद वि०स० 2075 अगस्त 2018 अंक : 8

मुद्रकः सरस्वती प्रेस, देहरादून वजनः 50 ग्राम

हम भी घर पर रहकर आराम कर सकते थे, हमें भी मां-बाप ने बड़ी मुश्किलों से पाला था, घर छोड़ते वक्त हम उनसे यह भी नहीं कह पाए, कि गर कभी आखों से आंसू गोद में टपकने लगें, तो मन-बहलाने के लिए उन्हें ही अपना बच्चा समझ लेना।

पं. राम प्रसाद 'बिस्मिल'

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी, देहरादून-248008

सामवेद

अथर्ववेद

पवमान पत्रिका हमारी वेबसाइट www.vaidicsadhanashramdehradun.com पर भी उपलब्ध है।

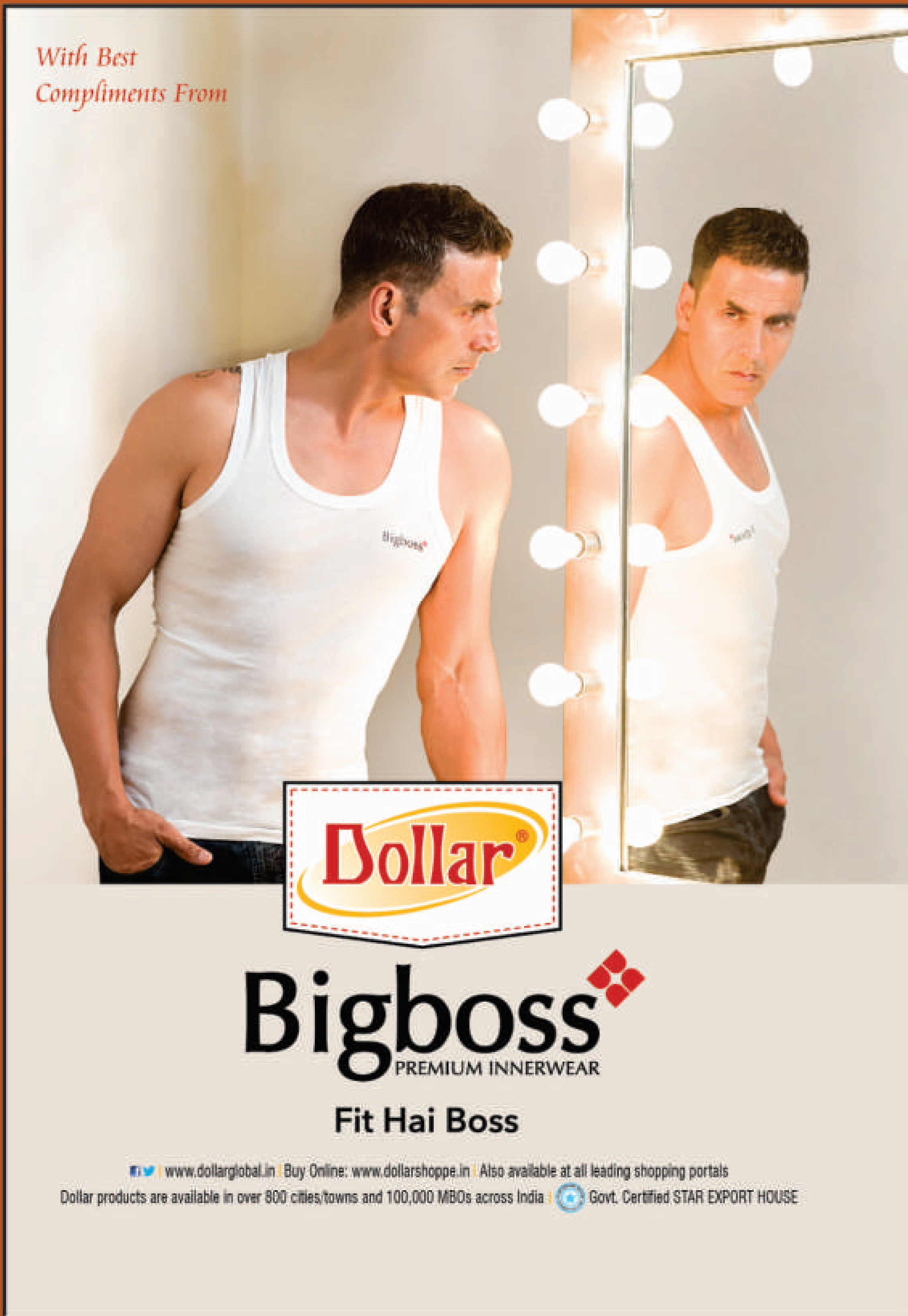
With Best
Compliments From
Dollar®
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss
www.dollarglobal.in | Buy Online: www.dollarshoppe.in | Also available at all leading shopping portals
Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBOs across India | Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

ओ३म्

पवमान

वर्ष–30 अंक–8

श्रावण–भाद्रपद 2075 विक्रमी अगस्त 2018

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,119 दयानन्दाब्द : 194

★

–: संरक्षक :–

स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती

★

–: अध्यक्ष :–

श्री दर्शनकुमार अग्निहोत्री

मो. : 09810033799

★

–: सचिव :–

प्रेम प्रकाश शर्मा

मो. : 9412051586

★

–: आद्य सम्पादक :–

स्व0 श्री देवदत्त बाली

★

–: मुख्य सम्पादक :–

कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

अवैतनिक

मो. : 9336225967

★

–: सम्पादक मण्डल :–

अवैतनिक

आचार्य आशीष दर्शनाचार्य

मनमोहन कुमार आर्य

★

–: कार्यालय :–

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन,

तपोवन मार्ग, देहरादून–248008

दूरभाष : 0135–2787001

Email : vaidicsadanashram88@gmail.com

Web-www.vaidicsadhanashramdehradun.com

विषयानुक्रम

सम्पादकीय	कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री	2
वेदामृत	स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती	3
भारतीय स्वतंत्रता संग्राम...	डा० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री	4
ऋषि दयानन्द और आजादी	मनमोहन कुमार आर्य	6
अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन–रिपोर्ट	मनमोहन कुमार आर्य	10
हनुमान का बचपन	श्री ईश्वरी प्रसाद 'प्रेम'	15
प्रफुल्ल चन्द्र चाकी	स्वामी यतीश्वरानन्द जी	16
पं. श्याम जी कृष्ण वर्मा	स्वामी यतीश्वरानन्द जी	18
जमींदार की दो लड़कियाँ	महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज	21
गुप्त रहस्य	महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती	23
प्रार्थना	वेदरत्न प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार	25
ग्लोबल वार्मिंग के कारण	श्री ओमप्रकाश भोला	27
बच्चों के रोग	आचार्य संदीप पत्रे	29
शरदुत्सव अक्टूबर 2018		31
दान–दाताओं की सूची		32

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून के बैंक खातों का विवरण

दान हेतु बैंक खाते का नाम	बैंक का नाम व पता	बैंक अकाउन्ट नं.	IFSC Code
आश्रम को दान देने के लिये			
1. "वैदिक साधन आश्रम"	कैनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101001530	CNRB0002162
पवमान पत्रिका शुल्क			
2. "पवमान"	कैनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101021169	CNRB0002162
सत्संग भवन एवं आरोग्य धाम के निर्माण में सहयोग हेतु			
3. "वैदिक साधन आश्रम"	ओरियन्टल बैंक ऑफ कामर्स 17 राजपुर रोड, देहरादून	00022010029560	ORBC0100002
तपोवन विद्यानिकेतन स्कूल के लिये			
4. 'तपोवन विद्या निकेतन"	यूनियन बैंक, तपोवन रोड, नालापानी, देहरादून	602402010003171	UBIN0560243

पवमान पत्रिका में विज्ञापन के रेट्स

1. कलर्ड फुल पेज — रु. 5000/– प्रति माह
2. ब्लैक एण्ड व्हाइट फुल पेज — रु. 2000/– प्रति माह
3. ब्लैक एण्ड व्हाइट हॉफ पेज — रु. 1000/– प्रति माह

पवमान पत्रिका के रेट्स

1. मासिक मूल्य (1 पत्रिका) — रु. 20/– एक प्रति
2. वार्षिक मूल्य (12 प्रतियाँ प्रति वर्ष) — रु. 200/– वार्षिक
3. 15 वर्ष (आजीवन) के लिए मूल्य — रु. 2000/–

पवमान में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र देहरादून ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

सम्पादकीय

स्वतंत्रता का महत्व

स्वतंत्रता का अर्थ है– अपना तंत्र अर्थात् अपनी व्यवस्था। यही अर्थ स्वाधीनता का भी है, जिसमें सभी व्यवस्थायें हमारे अधीन होती हैं। हमें संविधान के अन्तर्गत जहां कतिपय अधिकार प्राप्त हैं, वहीं हमारे कुछ कर्तव्य भी निर्धारित होते हैं। ऐसी व्यवस्था में कोई भी नागरिक मनमाना या स्वछंद व्यवहार करने के लिए स्वतंत्र नहीं रहता है। हमें 15 अगस्त, 1947 को ब्रिटिश शासन से मुक्ति मिली और इस देश के नागरिकों ने स्वतंत्रता का आनन्द प्राप्त किया। ब्रिटिश शासन से पूर्व सैकड़ों वर्षों तक यह देश विभिन्न विदेशी शासकों के अधीन परतंत्र रहा था। इनके राजा/महाराजा भी दमनकारी नीतियों में विदेशी आक्रांताओं से किसी भी प्रकार से कम न थे। नागरिको को किसी भी प्रकार के मूलभूत अधिकार प्राप्त न थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने स्वतंत्रता के सही अर्थ को समझा था, वे अत्यन्त दूरदृष्टि रखते थे, इसीलिए उन्होंने आर्यसमाज के दसवें नियम में स्वतंत्रता और परतंत्रता का विशेष उल्लेख करते हुए लिखा– ''सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतंत्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतंत्र रहें''। आज हम देख रहे हैं कि लोगों ने स्वतंत्रता का गलत अर्थ लेना प्रारम्भ कर दिया है। लोग अपनी जाति, सम्प्रदाय और क्षेत्र के आधार पर संगठन बनाकर उनका हित साधने में लग जाते हैं। वे अपने स्वार्थों के वशीभूत होकर अन्य नागरिकों के अधिकारों और हितों की उपेक्षा ही नहीं करते, अपितु अन्यों को नुकसान पहुंचाने में भी नहीं हिचकते हैं। इससे समाज में दिनादिन विद्वेश और घृणा फैल रही है। आजकल सोशल मीडिया तो विद्वेश और घृणा फैलाने में एक अग्रणी भूमिका निभा रहा है। यदि हमें बोलने और लिखकर अपने विचार प्रकट करने की स्वतंत्रता प्राप्त है तो इसका यह अभिप्राय नहीं है कि हम दूसरों पर कोई भी अनावश्यक टीका–टिप्पणी करने के लिए स्वतंत्र है। कभी–कभी तो सोशल मीडिया पर अनर्गल और झूठी अफवाहें फैलाकर इस प्रकार का विद्वेष फैला दिया जाता है कि इससे प्रभावित होकर कुछ सिरफिरे लोग निर्दोषों की मौबलिंचिंग जैसे घृणित अपराध कर बैठते हैं। हमें चाहिए कि हम स्वतंत्रता के सही अर्थ को समझें। संविधान में यदि हमें बोलने और लिखने की आजादी दी है, तो उसका गलत रूप से इस्तेमाल न करें। आजकल लोगों में क्रोध भी बहुत ज्यादा बढ़ने लगा है। सड़क को अपनी बपौती समझ कर अन्धाधुंध रफतार से वाहन दौड़ाते हैं। कोई यदि नियमपूर्वक भी वाहन चला रहा है, तो उससे उलझ कर जान से मार डालने तक का कुकृत्य कर डालते हैं। आर्यसमाज के दसवें नियम में संविधान के बनने से कई वर्ष पूर्व शिक्षा दी गई है कि सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतंत्र रहना चाहिए। स्वतंत्रता दिवस के इस पावन अवसर पर हम स्वतंत्रता के वास्तविक महत्त्व को समझें और अपनी स्वतंत्रता के साथ–साथ अन्य लोगों की स्वतंत्रता का भी आदर करते हुए संविधान में दिए गए अधिकारों का ही लाभ न लें अपितु कर्तव्यों का भी दृढ़ता से पालन करें, तभी हम एक स्वतंत्र देश के नागरिक के रूप में सफल होंगे। स्वतंत्रता दिवस की सभी सुधी पाठको को बधाई देते हुए यह **स्वाधीनता विशेषांक** प्रस्तुत है।

डॉ० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

वेदामृत

अजेय प्राण

वृत्रस्य त्वा श्वसथादीषमाणा विश्वे देवाः अजहुर्ये सखायः।
मरुद्भिरिन्द्र सख्यं ते अस्त्वथेमा विश्वाः पृतना जयासि।।

-ऋ० 8 । 96 । 7

ऋषिः- **तिरश्चीर्द्युतानो वा मारुतः।।** देवता-इन्द्रः।। छन्दः-**विराट्त्रिष्टुप्।।**

विनय-हे मेरे आत्मा! तेरे असली साथी तो प्राण ही हैं। जब तक प्राण तेरे साथी नहीं हो जाते तब तक अन्य देवों का साथ बेकार है, प्रत्युत समय पर धोखा देनेवाला है। मैं जब उत्तम ग्रन्थ पढ़ता हूँ, सन्तों की वाणी सुनता हूँ, पवित्र उपदेश श्रवण करता हूँ तब मन में बड़े दिव्य, उत्तम विचार उत्पन्न होते हैं; आन्तरिक मनन और भावना से मन की अवस्था ऐसी ऊँची हो जाती है कि हृदय में मानो देवसमाज लग जाता है। मैं अपने को बिल्कुल निर्विकार, निष्काम और पवित्र समझने लगता हूँ, परन्तु पाप-प्रलोभन के आते ही यह सब-का-सब उलट जाता है, वृत्रासुर के सम्मुख आने पर इस सब देव-समाज में भग्गी पड़ जाती है, उसकी फुंकार से सब दिव्य विचार क्षण में उड़ जाते हैं, जरा-सी देर में हृदय में महाबली वृत्रासुर का राज्य जम जाता है। उस समय यह जानता हुआ भी कि मैं बुरा कर रहा हूँ, पाप कर रहा हूँ, पाप की ही ओर खिंचा चला जाता हूँ। मनुष्य इस अवस्था से कैसे पार हो? इसका एक ही उपाय है कि मनुष्य प्राणों की समता प्राप्त करे। प्राणों का सम होना ही प्राणों की (मरुतों की) आत्मा के साथ मैत्री होना है। आत्मा के साथ जुड़ने पर, आत्मा के समीप होने पर प्राण सम और शान्त हो जाते हैं। ये सम हुए प्राण कार्य करने के बड़े प्रबल साधन बन जाते हैं। प्राण की सम अवस्था में जो विचार होते हैं, वे स्थिर और दृढ़ होते हैं; इस अवस्था में किये गये सङ्कल्प बड़ा विस्तृत प्रभाव रखते हैं। आत्मशक्ति जब प्राणों को आत्मगृहीत करके उन द्वारा प्रकट होती है तो उसके सामने कोई नहीं ठहर सकता, सब वासनाएँ दब जाती हैं, कोई भी पाप-विचार सिर ऊपर नहीं उठा सकता। बड़े-बड़े प्रलोभन, पाप की बड़ी-बड़ी फौजें आत्मा के एक सङ्कल्प के द्वारा दब जाती हैं, समाप्त हो जाती हैं; आत्माग्नि की एक लपट में भस्म होती हैं, जब वह आत्म-सङ्कल्प सम हुए, सखा बने हुए प्राणों द्वारा प्रकट होता है और जब आत्माग्नि प्राणमाध्यम द्वारा सहस्त्र-गुणित होकर जल उठती है। प्राणों की इस मैत्री को, दोस्ती को पाकर आत्मा क्या नहीं कर सकता? प्राण महाबली है। वह जब तक असम रहता है तब तक उसका बल, वृत्रासुर के काम आता है, परन्तु जब वह सम हो जाता है तो वह आत्मा का हो जाता है। आत्मा का सखा प्राण अजेय है।

शब्दार्थ- इन्द्र=हे आत्मन्! **विश्वे देवाः**=सब देव, सब दिव्यभाव **ये सखायः**=जो तेरे साथी बनते हैं **वृत्रस्य श्वसथात्**=पापासुर के साँस से, फुंकार से, बल-प्रदर्शन से **ईषमाणाः**=डरकर भागते हुए **त्वा**=तुझे **अजहुः**=छोड़ देते हैं। हे इन्द्र! **ते सख्यम्**=तेरी मैत्री, तेरा साथ **मरुद्भिः**=प्राणों के साथ **अस्तु**=यदि होता है या हो **अथ**=तो तू **इमाः विश्वाः पृतनाः**=पाप की इस सब बड़ी फौज को **जयासि**=जीत लेता है।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महर्षि दयानन्द सरस्वती और आर्यसमाज की भूमिका

—डा० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

महर्षि के ह्रदय में मातृभूमि का सर्वोपरि स्थान था और देश प्रेम की भावना उनमें कूटकूट कर भरी हुई थी। कांग्रेस के इतिहास में उल्लेख मिलता है कि सन 1906 में दादाजी भाई नौरोजी ने कांग्रेस के मंच से सर्वप्रथम 'स्वराज्य' शब्द का उद्घोष किया था। यह कथन सत्य नहीं है, क्योंकि एकबार लोकमान्य तिलक ने हैरान होकर यह पाया कि पारसी देशभक्त दादा भाई नौरोजी 'सत्यार्थ प्रकाश के पन्ने पलट रहे थे। उन्होंने दादाजी भाई नौरोजी से पूछा कि क्या वे आर्यसमाजी बन गए थे। इस पर दादाजी भाई नौरोजी का उत्तर था– ''नहीं, मुझे स्वराज्य समर में स्वामी दयानन्द के इस ग्रन्थ से भारी प्रेरणा प्राप्त होती है''। स्वराज्य के उद्घोषक लोकमान्य तिलक ने स्वयं लिखा हे कि दयानन्द स्वराज्य के प्रथम संदेशवाहक और मानवता के उपासक थे। ऋषि निर्वाणोत्सव पर 1950 में सरदार पटेल ने श्रद्धांजलि स्वरूप कहा था–''स्वामी दयानन्द का सबसे बड़ा योगदान यह था कि उन्होंने देश को किंकर्तव्य विमूढ़ता के गहरे गड्ढे में गिर जाने से बचाया उन्होंने भारत की स्वाधीनता की वास्तविक नींव डाली थी''। अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में वे लिखते हैं कि ''यह आर्यावर्त्त देश ऐसा है, जिसके सदृश भूगोल में दूसरा देश नहीं है। इसीलिए इस भूमि का नाम सुवर्णभूमि है, क्योंकि यही सुवर्ण आदि रत्नों को उत्पन्न करती हैं।'' महर्षि भारत को सब प्रकार से सम्पन्न देश बनाकर इस का उत्थान करना चाहते थे। उनका लक्ष्य देश को अतीत का गौरव प्राप्त कराकर सुदृढ़ और सुसंस्कृत राष्ट्र बनाना था। राष्ट्र की रक्षा के लिए वे पांच 'स्वकार' अनिवार्य मानते थे।

1—स्वसाहित्य, 2—स्वसंस्कृति, 3—स्वभाषा, 4—स्वधर्म और 5—स्वदेश हम यहां प्रसंग पर विचार करते हुए उनके स्वदेश प्रेम पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

स्वदेश प्रेम और स्वदेशाभिमान के बिना हम अपनी अस्मिता की रक्षा नहीं कर सकते हैं। राष्ट्रीयता का एक महत्वपूर्ण पहलू स्वशासन का सिद्धान्त माना जाता है। ब्रिटिश पार्लियामेण्ट ने एक कानून, (गवर्नमैंट आफ इन्डिया एक्ट, 1858) पास करके भारत के शासन—तन्त्र को ईस्ट इन्डिया कम्पनी से लेकर सीधा अपने अधीन कर लिया था। 1 नवम्बर 1858 को तत्कालीन वायसराय और गवरनर जनरल लार्ड केनिंग ने दरबार में महारानी का एक घोषणा पत्र पढ़ कर सुनाया जिसमें कहा गया था—''हमारी प्रबल इच्छा है कि अब हम भारत में शान्तिपूर्ण उद्योगों को प्रोत्साहन दें, जनोपयोगी और उन्नति के कार्यो को आगे बढ़ायें और अपनी प्रजा के हित की दृष्टि से कार्य करें। उनकी समृद्धि ही हमारी शक्ति होगी, उनकी संन्तुष्टि ही हमारी सुरक्षा होगी और उनकी कृतज्ञता ही हमारा पुरुष्कार होगा।'' महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में कहा कि विदेशियों का राज्य चाहे वह माता—पिता के समान न्याय और दया से युक्त क्यों न हो, कभी हितकारी नहीं हो सकता है। सन 1874 में लिखे गये ग्रन्थ आर्याभिविनय में महर्षि दयानन्द ने अपनी भावनायें इस प्रकार प्रकट कीं थीं—''अन्यदेशवासी राजा हमारे देश में

कभी न हों तथा हम लोग पराधीन कभी न हों।'' उस समय तक स्वराज्य का विचार किसी भी राजनेता या विद्वान् के दिमाग में नहीं आया था। जैसा कि उपरोक्त रूप से उल्लेख किया गया है कि कांग्रेस के भीष्म पितामह दाभाई नौरोजी ने सर्वप्रथम 1906 में ''स्वराज्य'' शब्द का उच्चारण किया था और होमरूल आन्दोलन के दिनों में इस शब्द का खुलकर प्रयोग होने लगा था। कांग्रेस के 1916 में लखनऊ में हुए अधिवेशन में लोकमान्य तिलक ने ''स्वराज्य के जन्मसिद्ध अधिकार''' की घोषणा की और 1928 के लाहौर अधिवेशन में कांग्रेस ने पूर्ण स्वराज्य प्राप्त करने के लक्ष्य की घोषणा की थी परन्तु महर्षि दयानन्द ने इससे कई वर्ष पूर्व ही स्वराज्य के विचार को न केवल प्रचारित किया अपितु अपने अनुयायियों 'में राष्ट्रप्रेम की भावनायें भर दीं जिसके फलस्वरूप देश के अनेक नौजवाान स्वतन्त्रता संग्राम में कूद पड़े। सन 1919 में भारत के स्वाधीनता संग्राम के इतिहास का नया अध्याय आरम्भ हुआ। ब्रिटिश राजनीतिज्ञों द्वारा प्रथम विश्वयुद्ध के अवसर पर लोकतंत्र, राष्ट्रीयता और स्व–भाग्य निर्णय का समर्थन करने वाले सिद्धान्तों की घोषणाएं कीं गईं थीं। उनके द्धारा भारतीय जनता को आश्वासन दिया गया था कि युद्ध के समाप्त होते ही वे भारत में उत्तरदायी शासन दिए जाने के सम्बन्ध में कोई महत्वपूर्ण निर्णय लेंगे परन्तु सन 1919 में गवर्नमैंट ऑफ इन्डिया एक्ट द्धारा जिन शासन–सुधारों की घोषणा की गई उनसे जनता संतुष्ट नहीं हुई।

रॉलेट एक्ट के दमनकारी कानून का विरोध करने हेतु स्वामी श्रद्धानन्द ने तार द्धारा अपने सहयोग देने की सहमति प्रदान की थी। दिल्ली सत्याग्रह के संचालन के लिए एक कमेटी गठित की गई। इसके एक तिहाई से अधिक सदस्य आर्य सभासद थे। दिसम्बर सन 1919 में कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन अमृतसर में हुआ जिसकी स्वागतकारिणी समिति के अध्यक्ष स्वामी श्रद्धानन्द चुने गए थे। अपने अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने अछूतोद्धार पर बहुत जोर दिया। उनका कहना था कि देश की स्वतन्त्रता के लिए उन बुराइयों को दूर करना आवश्यक है जिनके कारण देश गुलाम बना था। उन्होंने अस्पृश्यता निवारण को कांग्रेस के कार्यक्रम में सम्मिलित कराया। उनका हिन्दी में भाषण देना भी एक क्रांतिकारी कदम था। सितम्बर 1920 में कांग्रेस का विशेष अधिवेशन कलकत्ता में हुआ, जिसमें गांधी जी ने असहयोग आन्दोलन का प्रस्ताव रखा था। इस आन्दोलन ने व्यापक रुप धारण किया। आन्दोलन चलाने के लिए धन की आवश्यकता थी। महात्मा गांधी ने इसके लिए तिलक फण्ड बनाकर धनराशि एकत्र करने की अपील की थी। गुरुकुल कांगड़ी के विद्यार्थी तिलक स्वराज्य फण्ड एकत्र करने के लिए निकल पड़े थे। स्वामी श्रद्धानन्द ने भी इस असहयोग आन्दोलन में उत्साहपूर्वक भाग लिया। महात्मा गांधी के इस असहयोग आन्दोलन को श्रद्धानन्द और अन्य आर्य नेता महर्षि दयानन्द द्वारा प्रदर्शित मार्ग के अनुरुप ही मानते थे इसलिए वे बड़ी संख्या में सम्मिलित हुए और उन्होंने अपनी पूर्ण शक्ति लगा दी थी। भारत को अन्ततोगत्वा 15 अगस्त 1947 को स्वतन्त्रता प्राप्त हुई। भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में महर्षि दयानन्द के लाखों अनुयायियों ने तन, मन, धन और अपना जीवन तक निछावर कर दिया इनमें लाला लाजपतराय, एम.जी.रानाडे, स्वामी श्रद्धानन्द, भाई परमानन्द, श्यामजी कृष्ण वर्मा, इन्द्र वाचस्पति, भगवतीचरण, भगतसिंह, रामप्रसाद बिस्मल, रोशन सिंह गेंदालाल दीक्षित, मदनलाल धींगड़ा, भाई बालमुकुन्द, मुरलीधर, देशबन्धु गुप्ता आदि प्रमुख हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महर्षि दयानन्द सरस्वती और उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। इन समस्त स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान के लिए राष्ट्र उनका सदा ऋणी रहेगा।

ऋषि दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों में देश को आजादी दिलाने की भावना व प्रेरणा विद्यमान है

–मनमोहन कुमार आर्य

ऋषि दयानन्द वैदिक ऋषि हैं एवं आर्यसमाज के संस्थापक भी हैं। उन्होंने मथुरा के गुरु स्वामी विरजानन्द सरस्वती से वैदिक व्याकरण एवं वेदों का अध्ययन कर देश में वेदों का प्रचार करके अविद्या दूर करने का संकल्प लिया था। सन् 1874 में स्वामी दयानन्द जी को काशी में राजा जयकृष्णदास, डिप्टी कलेक्टर ने अपने वेद विषयक धार्मिक व सामाजिक विचारों का एक ग्रन्थ तैयार करने की प्रेरणा की थी। इस अनुरोध का परिणाम ही सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ का लेखन व प्रकाशन हुआ। भारत का भाग्य बदलने सहित विश्व के सभी धर्म–ग्रन्थों पर प्रभाव डालने में इस ग्रन्थ का महत्वपूर्ण योगदान है। 10 अप्रैल सन् 1875 को आर्यसमाज की स्थापना होने पर यही ग्रन्थ आर्यसमाज का धर्मग्रन्थ व देश व विश्व के सुधार का मुख्य ग्रन्थ बना और आज भी यही ग्रन्थ पूरे विश्व को अनेक प्रकार से प्रभावित कर रहा है। इस ग्रन्थ से लोगों को ईश्वर, जीवात्मा व प्रकृति के सत्य स्वरूप का बोध हुआ। वेद व ऋषियों के ग्रन्थों पर आधारित सत्य व ज्ञानपूर्ण सामाजिक परम्पराओं का ज्ञान भी इसी से हुआ। ईश्वर की उपासना क्यों व कैसे की जाती है, इस विषय को भी यह ग्रन्थ अपने अध्येता को बताता है। सभी सामाहिक कुप्रथाओं व मत–मतान्तरों की मिथ्या बातों का खण्डन व सत्य परम्पराओं का प्रकाश भी इस ग्रन्थ से होता है। **अनेक विशेषताओं से युक्त इस ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश ने देश की आजादी का मूल मन्त्र भी दिया है।** इसका कारण ऋषि दयानन्द का वेद व वैदिक साहित्य का तलस्पर्शी ज्ञान तो था ही, इसके साथ ही सन् 1846 से सन् 1874 व उसके बाद के वर्षों में अंग्रेजों के भेदभाव व अन्यायपूर्ण शासन को उन्होंने अपनी सूक्ष्म दृष्टि से देखा था। देश के युवक, किसान, श्रमिक व कर्मचारी सभी लोग अन्याय, शोषण व अत्याचार का शिकार होते थे। **स्वामी दयानन्द जी सन् 1857 में देश को आजाद कराने की क्रान्ति के समय 32 वर्ष के युवक थे। उन्होंने अपनी आयु के बाईसवें वर्ष में गृहत्याग करके व देश के अनेक स्थानों पर घूमकर लोगों पर अंग्रेज शासकों के अत्याचारों को देखा था। सन् 1857 की क्रान्ति की विफलता के बाद आजादी में सक्रिय लोगों पर अंग्रेजों के अमानवीय अत्याचारों को भी उन्होंने जाना व देखा था।** सन् 1857 में उनकी क्या भूमिका थी इसका प्रामाणिक विवरण नहीं मिलता। इतना अवश्य है कि इन घटनाओं में वह उदासीन बने रहे हों, यह सम्भव नहीं है। उन्होंने जो किया होगा वह अविदित इतिहास है। यदि वह सन् 1857 की क्रान्ति की घटनाओं से अछूते रहते तो फिर उन्होंने अपने ग्रन्थों में देश को चक्रवर्ती राज्य बनाने सहित स्वदेशीय राज्य विषयक जिन बातों का उल्लेख किया है, वह न लिखते जैसा कि उनके समकालीन व बाद के अन्य विख्यात संन्यासियों ने किया।

सत्यार्थप्रकाश के आठवें समुल्लास में ऋषि दयानन्द ने लिखा है **'अब अभाग्योदय से और आर्यों के आलस्य, प्रमाद, परस्पर के विरोध से अन्य देशों के राज्य करने की तो कथा ही क्या कहनी किन्तु आर्यावर्त में भी आर्यों का अखण्ड, स्वतन्त्र, स्वाधीन, निर्भय राज्य इस समय नहीं है। जो कुछ है सो भी विदेशियों (अंग्रेजों व अन्यों) के पदाक्रान्त हो रहा है।** कुछ थोड़े राजा स्वतन्त्र हैं। दुर्दिन जब आता है तब देशवासियों को अनेक प्रकार का दुःख भोगना पड़ता है। **कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत–मतान्तर के आग्रहरहित अपने और पराये का पक्षपातशून्य प्रजा पर पिता माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।** परन्तु भिन्न–भिन्न भाषा, पृथक्–पृथक् शिक्षा, अलग व्यवहार का विरोध छूटना अति दुष्कर है। बिना इसके छूटे परस्पर का पूरा उपकार और अभिप्राय (देश की आजादी, धार्मिक, शारीरिक, सामाजिक एवं भौतिक उन्नति का) सिद्ध होना कठिन है। इसलिये जो कुछ वेदादि शास्त्रों में व्यवस्था वा इतिहास लिखे हैं उसी का मान्य करना भद्रपुरुषों का काम है।'

स्वामी जी ने इन पंक्तियों में स्पष्टतः स्वदेशी राज्य को सर्वोपरि उत्तम कहा है और सभी प्रकार की अच्छाईयों से युक्त विदेशियों का राज्य पूर्ण सुखदायक नहीं है, इसकी भी निर्णायक घोषणा की है। यह पंक्तियां सत्यार्थप्रकाश के दूसरे संस्करण में कही गईं हैं जिसका प्रकाशन उनकी मृत्यु के कुछ काल बाद हो सका था। ऋषि के जीवनकाल में ही सत्यार्थप्रकाश का ग्यारहवां समुल्लास व उसके पूर्व के भी सभी समुल्लास छप चुके थे और उसकी कुछ प्रतियां कुछ लोगों तक पहुंच गई थीं। **ऋषि दयानन्द जी के सत्यार्थप्रकाश में लिखे यह शब्द अंग्रेजों को अवश्य चुभने वाले थे।** इसके बाद एक प्रसंग और है जहां ऋषि दयानन्द ने मूर्तिपूजा के प्रसंग में देशवासियों को देश को आजाद कराने का संकेत व प्रेरणा की है। इस प्रसंग को पढ़कर ऐसा प्रतीत होता है कि शायद ऋषि दयानन्द इस घटना के प्रत्यक्षदर्शी रहे हों। इस प्रसंग को स्वामी दयानन्द जी ने सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में लिखा है। वह कहते हैं **'जब संवत् 1914 (सन् 1857) के वर्ष में तोपों के मारे (द्वारिका के श्रीकृष्ण जी के) मन्दिर की मूर्तियां अंग्रेजों ने उड़ा दी थीं तब मूर्ति (वा उसकी शक्ति) कहां गई थीं? प्रत्युत बाघेर लोगों ने (द्वारिका के स्थानीय लोगों ने) जितनी वीरता की और (अंग्रेजों से) लड़े शत्रुओं को मारा परन्तु मूर्ति एक मक्खी की टांग भी न तोड़ सकी। जो श्रीकृष्ण के सदृश कोई होता तो इनके (अंग्रेजों के) धुर्रे उड़ा देता और ये भागते फिरते।** भला यह तो कहो कि जिस का रक्षक मार खाये उस के शरणागत क्यों न पीटे जायें?' यह घटना भी अंग्रेजों को अवश्य चुभी होगी। आर्यसमाज के विद्वान श्री आदित्य मुनि का अनुमान है कि यही पंक्तियां स्वामी जी की मृत्यु का कारण हो सकती हैं।

इस प्रकार स्वामी दयानन्द जी ने अंग्रेजों के राज्य में स्वदेशी राज्य को उत्तम बताया और विदेशी राज्य को हेय बताकर आजादी के आन्दोलन का आरम्भ कर दिया

था। यह बात और है कि यह आन्दोलन आर्यसमाज ने नहीं क्रान्तिकारियों और कांग्रेस के लोगों ने देश, काल व परिस्थितियों के अनुसार चलाया। यह भी तथ्य है कि आजादी के आन्दोलन में सबसे अधिक लोग आर्यसमाज के अनुयायी थे जो सत्यार्थप्रकाश और ऋषि दयानन्द के विचारों से प्रभावित थे। स्वामी दयानन्द भारतीयों को यह भी अहसास कराते हैं कि मुगल बादशाहों ने भी अकारण हमारे पूर्वजों व हमारे धर्म का अपमान किया। सन् 1875 में प्रकाशित सत्यार्थप्रकाश के प्रथम संस्करण में वह लिखते हैं **'फिर दिल्ली में औरंगजेब एक बादशाह हुआ था। उसने मथुरा, काशी, अयोध्या और अन्य स्थान में भी जा–जा कर मन्दिर और मूर्तियों को तोड़ डाला और जहां–जहां बड़े–बड़े मन्दिर थे, उस–उस स्थान पर अपनी मस्जिद बना दी।'** सत्यार्थप्रकाश के प्रथम संस्करण में ही ऋषि दयानन्द अंग्रेजों की प्रशंसा और आलोचना भी एक साथ करते हुए कहते हैं **'जैनियों और मुसलमानों ने इस देश को बहुत बिगाड़ा है सो आज तक बिगड़ता ही जाता है।** आजकल अंगरेजों का राज्य होने से उन राजाओं के राज्य से कुछ सुख हुआ है क्योंकि अंगरेज लोग मत–मतमतान्तर की बात में हाथ नहीं डालते और जिस पुस्तक के सौ रुपये लगते थे, उस पुस्तक के मुद्रित होने से पांच रुपयों में मिलता है। **परन्तु अंग्रेजों से भी एक काम अच्छा नहीं हुआ जो कि चित्रकूट पर्वत पर महाराज अमृतराय जी के पुस्तकालय को जला दिया। उस पुस्तकालय में करोड़ो रुपये की लाखों अच्छी अच्छी पुस्तकें नष्ट कर दीं।'** (सत्यार्थप्रकाश एकादश समुल्लास)।

अंग्रेजों ने नमक और जंगली घास व जलाने की लकड़ी पर **'नोन और पौन रोटी कर'** लगाया था। सन् 1874 में ऋषि दयानन्द ने इस कर **(Tax)** का विरोध किया। उन्होंने सत्यार्थप्रकाश में लिखा कि **'नोन और पौन रोटी में जो कर लिया जाता है वह मुझको अच्छा नहीं मालूम देता क्योंकि नोन के बिना दरिद्र का भी निर्वाह नहीं होता किन्तु सबको नोन का आवश्यक होता है और वे मजदूरी मेहनत से जैसे तैसे निर्वाह करते हैं, उनके ऊपर भी यह नोन का कर दण्ड तुल्य रहता है। इससे दरिद्रों को क्लेश पहुंचता है। यदि मद्य, अफीम, गांजा, भांग इनके ऊपर चौगुना कर स्थापन हो तो अच्छी बात है क्योंकि नशादिकों का घटना ही अच्छा है और जो मद्यादिक बिलकुल छूट जायं तो मनुष्यों का बड़ा भाग्य है क्योंकि नशा करने से किसी को कुछ उपकार नहीं होता। परन्तु रोगनिवृत्ति के वास्ते औषधार्थ तो मद्यादिकों की प्रवृत्ति रहना चाहिये, क्योंकि बहुत से ऐसे रोग हैं कि जिनके मद्यादिक ही निवृत्तिकारक औषध हैं। जितने नशा करनेवाले पदार्थ हैं वे सब बुद्धि आदि के नाशक हैं। इससे इनके ऊपर कर लगाना चाहिये और लवणादि के ऊपर न लगना चाहिये।'** वह आगे लिखते हैं **'पौन रोटी से भी गरीब लोगों को बहुत क्लेश होता है, क्योंकि गरीब लोग कहीं से घास छेदन करके ले आयें वा लकड़ी का भार, उनके ऊपर कौड़ियों के लगने से उनको अवश्य क्लेश होता होगा। इससे पौन रोटी का जो कर स्थापन करना सो भी हमारी समझ से अच्छा नहीं।'** अंग्रेजों ने भूमि व भवन आदि की रजिस्ट्री आदि पर लगने वाले स्टैम्प पेपर व

मुकदमों में लगने वाली कोर्ट फीस पर भी कर व व्यय बढ़ा दिया था। इसका भी ऋषि दयानन्द ने इसी समुल्लास में विरोध किया है। उन्होंने इस प्रसंग में यह भी लिखा है कि **'थाने से लेके आगे–आगे धन का ही खर्च देख पड़ता है, न्याय होना तो पीछे।'** ऐसे अनेक स्थल हैं जहां ऋषि दयानन्द अंग्रेजों की आलोचना करते हैं।

ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों से हमने जो उपरोक्त उद्धरण दिये हैं उनमें वह देश के स्वतंत्र होने सहित उसके चक्रवर्ती राज्य होने वा बनने के प्रति जागरुक दिखते हैं और अपने ग्रन्थों के पाठकों को भी वैसा ही बनाना चाहते हैं। ऋषि दयानन्द के समय में उपलब्ध अन्य समस्त साहित्य में इस प्रकार का वर्णन कहीं उपलब्ध नहीं होता। **वह पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने स्पष्टतः अंग्रेजी राज्य का विरोध किया जिससे देशवासियों को देश को आजाद कराने की प्रेरणा मिली।** उनके प्रायः सभी अनुयायी देश की आजादी के स्वप्नद्रष्टा थे और अधिकांश ने देश की आजादी में सक्रिय भूमिका निभाई। स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय, भाई परमानन्द, पं. राम प्रसाद बिस्मिल, शहीद भगत सिंह का परिवार आदि सभी ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज के अनुयायी थे। यह भी बता दें कि नरम व गरम दोनों दलों के आद्य नेता ऋषि दयानन्द की शिष्य परम्परा में थे। राजनेता गोपाल कृष्ण गोखले कांग्रेस के प्रमुख नेता थे जो महादेव गोविन्द रानाडे के शिष्य थे। गांधी जी गोपाल कृष्ण गोखले जी के शिष्य थे। महादेव रानाडे ऋषि दयानन्द के साक्षात् शिष्य थे। क्रान्तिकारियों के आद्य गुरु पं. श्यामजी कृष्ण वर्म्मा भी स्वामी दयानन्द जी के साक्षात शिष्य थे। इस प्रकार नरम व गरम दोनों दलों के नेताओं पर स्वामी दयानन्द का प्रभाव परिलक्षित होता है। सन् 1947 में देश आजाद हुआ और इसका विभाजन भी हुआ। यदि देश के लोगों ने ऋषि दयानन्द के विचारों को समग्रता से अपना लिया होता तो देश का विभाजन न होता और देश विश्व की एक महाशक्ति होता। हमने ऋषि दयानन्द के जो विचार प्रस्तुत किये हैं उनसे वह स्वतन्त्रता व स्वदेशीय राज्य के प्रथम व प्रबल पक्षधर सिद्ध होते हैं। उन्होंने अपने प्राणों की चिन्ता न करके अंग्रेजों के दमनकारी शासन काल में उनकी आलोचना की। अनुमान है कि उनके इन कार्यों के कारण ही उनकी हत्या का षडयन्त्र हुआ और वह 58–59 वर्ष की आयु में ही संसार से विदा हो गये। ओ३म् शम्।

तीन ही क्यों, यदि हम सात भाई भी होते तो, सभी पुष्पों की तरह भारत माँ के चरणों पर न्यौछावर होकर बलिदान का अमर इन्द्रधनुष बन जाते।

''सारा जीवन, पूरा परिवार
भारत माँ के चरणों में दिया वार''

–वीर सावरकर

स्वामी दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द न होते तो स्वामी रामदेव भी न होते

–मनमोहन कुमार आर्य

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के द्वारा आयोजित तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन, गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार के परिसर में 6 जुलाई, 2018 को आरम्भ हुआ। अपरान्ह 4.00 बजे से सम्मेलन का उद्‌घाटन समारोह हुआ जिसे पतंजलि योगपीठ के विश्व विख्यात योगाचार्य स्वामी रामदेव जी, मेघालय के राज्यपाल ऋषिभक्त श्री गंगा प्रसाद जी एवं कई आर्य संन्यासी एवं नेताओं ने सम्बोधित किया। स्वामी रामदेव जी ने ऋषि दयानन्द को श्रद्धांजलि देते हुए अपने सम्बोधन के आरम्भ में तीन नारे लगाये **'सत्य सनातन वैदिक धर्म की जय, महर्षि दयानन्द जी की जय और भारत माता की जय।'** सम्बोधन के आरम्भ में **स्वामी रामदेव जी ने कहा कि यदि महर्षि दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द न होते तो स्वामी रामदेव भी न होते।** उन्होंने कहा कि आज दुनियां वाले कहते हैं कि अब आक्सफोर्ड व हावर्ड वाले पीछे छूट गये हैं और गुरुकुल वाले उनसे आगे बढ़ गये हैं। स्वामी रामदेव जी ने कहा कि **हम ऋषि परम्परा और आर्य मान्यताओं को मानते हैं। उन्होंने कहा कि हम वेद को मानने वाले हैं। आर्यसमाज एक हो जायेगा तो दुनिया से पाखण्ड व अन्धविश्वासों का अन्त हो जायेगा।** स्वामी रामदेव जी ने पिछले दिनों दिल्ली के पास 11 लोगों की आत्महत्याओं की चर्चा की और उस पाखण्ड व अन्ध–विश्वास का भी उल्लेख किया जिसके कारण 11 मानव जीवन नष्ट हो गये। **उन्होंने कहा कि पाखण्ड एवं अन्ध विश्वासों का समाधान महर्षि दयानन्द जी की विचारधारा है।** स्वामी रामदेव जी ने कहा कि देश के पाखण्डी एवं अंधविश्वासी लोग देश की पचास हजार करोड़ से अधिक की धन व सम्पत्ति प्रति वर्ष लूटते हैं। उन्होंने कहा कि **आर्यसमाज के विद्वानों और ऋषि भक्तों को देश के लोगों को ईश्वर का सच्चा स्वरुप बताना चाहिये।** सभी पाखण्डों एवं अंधविश्वासों का पूरे दम खम के साथ खण्डन करना चाहिये। ऋषिभक्त स्वामी रामदेव जी ने कहा कि **पाखण्ड, अन्धविश्वास, नशाखोरी, मांसाहार आदि देश व समाज के शत्रु हैं।** उन्होंने कहा कि आर्यसमाज का कोई अनुयायी मांसाहार, नशाखोरी, अश्लीलता और अन्धविश्वास के कार्य नहीं करता। आर्यसमाज को पूरे देश में नशाबन्दी का आन्दोलन चलाना चाहिये जिससे देश में एक भी व्यक्ति नशाखोरी करने वाला न मिले।

स्वामी रामदेव जी ने आगाह करते हुए कहा कि दलितों, शोषितों, वंचितों को आर्यसमाज से लड़ाने की कोशिश की जा रहीं हैं। उन्होंने कहा कि केवल राजनैतिक आजादी

से देश स्वतन्त्र नहीं हो जाता। उन्होंने कहा कि वैचारिक स्वतन्त्रता के साथ देश के नागरिकों को देश के इतिहास व ज्ञान से युक्त परम्पराओं का सम्मान भी करना चाहिये। स्वामी रामदेव जी ने कहा कि मैकाले की शिक्षा पद्धति ने देश को एक मशीन बना दिया है। हमें वेदों की शिक्षा से देश के लोगों का समग्र व दिव्य विकास करना है। उन्होंने कहा कि मनुष्य परमात्मा की श्रेष्ठ रचना है। उसे जाग्रत करने का काम शिक्षा का है। स्वामी जी ने बताया कि उन्होंने बचपन में ही आर्योद्देश्यरत्नमाला, सत्यार्थप्रकाश, संस्कारविधि आदि ऋषि दयानन्द के अनेक ग्रन्थों को कम से कम तीन बार पढ़ लिया था फिर मैंने अध्ययन के लिए गुरुकुल की तलाश की। उन्होंने कहा कि लोगों से पूछता हुआ मैं गुरुकुल प्रभात आश्रम पहुंचा जहां मुझे कहा गया कि तुम्हारी उम्र दो वर्ष अधिक है। तुम्हें उस गुरुकुल में भर्ती नहीं किया जा सकता। मुझे गुरुकुल कालवां जाने को कहा गया। मैं वहां पहुंचा तो उन्होंने मेरी उम्र दो वर्ष कम बता कर मुझे प्रवेश देने से मना कर दिया। इसके बाद मैं गुरुकुल खानपुर गया। उन्होंने कहा कि वह मुझे तभी प्रविष्ट करेंगे जब वह मेरे माता–पिता को पत्र लिख कर उनकी स्वीकृति प्राप्त कर लेंगे। उन्होंने पत्र लिखा। **स्वामी रामदेव जी ने कहा कि हमने ठान रखा था कि पढ़ना है तो गुरुकुल में ही पढ़ना है।**

स्वामी रामदेव जी ने कहा कि गुरुकुल मानव जीवन निर्माण वा मनुष्य जीवन बनाने की श्रेष्ठ पद्धति है। **गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति से मानव जीवन का समग्र विकास होता है। उन्होंने कहा कि जो मनुष्य गुरुकुल पद्धति से दीक्षित हो गया वह देवत्व व ऋषित्व पर आरोहण करता है।** स्वामी जी ने गुरुकुलों की चुनौतियों की भी चर्चा की। उन्होंने बताया कि वह प्रयासरत है जिससे

गुरुकुलों की पाठ विधि क्या हो, इसका समाधान शीघ्र ही निकल जायेगा। उन्होंने बताया कि पाठ विधि का प्रश्न केन्द्र व राज्य के पृथक पृथक विषयों व अधिकारों के बीच उलझा हुआ है। उन्होंने कहा कि दो काम किये जा चुके हैं। कक्षा 5 से 12 तक अष्टाध्यायी, महाभाष्य, दर्शन आदि के समन्वय सहित आर्ष पाठ विधि की व्यवस्था। **स्वामी जी ने कहा कि ऋषि दयानन्द जी की आर्ष पाठ विधि की हम हरिद्वार व उत्तराखण्ड में व्यवस्था कर देंगे। स्वामी जी ने श्रोताओं को आश्वस्त करते हुए कहा कि आगे 8–10 वर्षों में आप देखेंगे कि मैकाले के विकल्प के रुप में आर्ष शिक्षा पद्धति की व्यवस्था कर दी जायेगी।** उन्होंने कहा कि मैं पिछले 8–10 वर्षों से इस काम में लगा हुआ हूं। स्वामी जी ने कहा कि मनुष्य का निर्माण हमारे गुरुकुलों की पाठ विधि से कम अपितु वहां की दिनचर्या और जीवन पद्धति से अधिक होता है। उन्होंने गुरुकुल में ब्रह्मचारियों के चार बजे शय्या त्याग करने, प्रार्थना मंत्र बोलने, व्यायाम व योग करने, सन्ध्या व यज्ञ करने, गुरु के सान्निध्य में रहने और सायं यज्ञ करने सहित रात्रि को मन्त्र बोल कर शयन करने की जीवन पद्धति को जीवन निर्माण का महत्वपूर्ण अंग बताया।

स्वामी जी ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि मुझे यहां ब्रह्मचारियों से अधिक गुरुकुलों की ब्रह्मचारणियां नजर आ रही हैं। स्वामी **जी ने कहा कि गुरुकुल हमारी मातृ संस्था है। उन्होंने कहा समय समय पर बालकृष्ण जी और मैं विचार करते हैं कि हम गुरुकुलों के लिए क्या कर सकते हैं। स्वामी जी ने इसी क्रम में उनके स्वदेशी अभियान की भी चर्चा की। उन्होंने विस्तार से बताया कि हमने विदेशी कम्पनियों को परास्त करके दिखाया है। उन्होंने कहा**

कि परमार्थ हमारे जीवन का लक्ष्य है। हमारा अर्थ भी परमार्थ के लिए ही होना चाहिये। स्वामी जी ने घोषणा की कि आगामी दिनों में वेदों पर आधारित शिक्षा व्यवस्था वाला एक विश्वविद्यालय वह देंगे जहां 1 लाख से अधिक ब्रह्मचारी व ब्रह्मचारणियां अध्ययन कर सकेंगी। उन्होंने कहा कि हम से जो बन पायेंगा वह श्रेय कर्म हम गुरुकुलों के लिए करेंगे। स्वामी जी ने गुरुकुलों के सामने उपस्थित आर्थिक चुनौतियों की भी चर्चा की। उन्होंने कहा कि मैं गुरुकुल में अकेला 40 विद्यार्थियों के लिए भिक्षा मांगकर लाता था। स्वामी जी ने बताया कि हमें गुरुकुलों के लिए व्याकरण के अच्छे विद्वान नहीं मिलते। हमने 500 ब्रह्मचारी व 500 ब्रह्मचारणियों को तैयार किया है। इतने ही विद्वान अब हम हर वर्ष तैयार करेंगे। **स्वामी जी ने कहा कि गुरुकुल कांगड़ी अन्य धर्मावलम्बियों की तरह से आपका बहुत बड़ा तीर्थ है। उन्होंने कहा कि आर्यसमाज के लोगों को वर्ष में एक बार यहां अवश्य आना चाहिये और यहां सम्मेलन या विद्वानों की गोष्ठी, चिन्तन शिविर व मन्त्रणायें करनी चाहिये।** इस कार्य में हमसे जो मदद हो सकती है वह हम करेंगे। स्वामी जी ने कहा कि अकेले आर्यसमाज, इसके संगठन व संस्थाओं ने देश की अन्य समस्त संस्थाओं व संगठनों से भी अधिक कार्य किया है। **उन्होंने कहा कि आर्यसमाज में शौर्य और पराक्रम की कमी नहीं है। स्वामी जी ने कहा एक बालकृष्ण और स्वामी रामदेव जो कार्य कर सकता है, आर्यसमाज का लगभग 150 वर्ष पुराना संगठन उससे कहीं अधिक कार्य अवश्य कर सकता है।**

स्वामी जी ने कहा कि आर्यसमाज विश्व का सबसे बड़ा आध्यात्मिक एवं सामाजिक संगठन है। उन्होंने कहा यदि आजादी के समय हम अपना एक राजनैतिक संगठन खड़ा कर लेते तो आज हमें दूसरे राजनीतिक दलों से अपनी मांगें पूरी करने के लिए प्रार्थना न करनी पड़ती। आज हम भीख मांगने की स्थिति में न होते। स्वामी जी ने कहा कि राजनीतिक शक्ति के बिना काम नहीं चलता। उन्होंने कहा कि हमें सरकार व राजनीतिक दलों से मांगना पड़ता है कि हमारे गुरुकुलों को मान्यता दे दो। हमें दूसरों से मांगना पड़े यह हमारे लिए धिक्कार है। इसके बाद स्वामी जी ने पंडित सत्यापाल पथिक जी का एक भजन पूरा गाकर सुनाया। भजन के बोल हैं **'सूरज बन दूर किया पापों का घोर अन्धेरा, वह देव गुरु है मेरा, वह देव दयानन्द मेरा। मथुरा नगरी से उदय हुआ विरजानन्द का चेरा, वह देव गुरु है मेरा, वह देव दयानन्द मेरा।'** भजन के मध्य में ही **स्वामी जी ने कहा कि आर्यसमाज के अतिरिक्त अन्य कोई संस्था देश में नहीं है जो वेद पढ़ाती हो। आर्यसमाज में स्त्रियों से भेदभाव नहीं है। इसका देश के स्तर पर प्रचार करने की जरुरत है।** इसके बाद भजन फिर जारी रहा। स्वामी जी ने इसी बीच पथिक जी को स्मरण कर कहा कि मैंने उन्हें यहां घूमते हुए देखा है। पथिक जी ने भजनों के माध्यम से आर्यसमाज व देश की बहुत बड़ी सेवा की है। मैं लगभग 80 प्रतिशत भजन उन्हीं के गाता हूं। पथिक जी जहां हों मंच पर आ जायें। यह बात उन्होंने दो तीन बार दोहराई। कुछ देर बाद पथिक जी मंच पर पहुंचे। इसी बीच स्वामी रामदेव जी ने घोषणा की वह पथिक जी के सम्मान में एक लाख रुपये की धनराशि देंगे। आप उनका यहां अच्छी प्रकार से अभिनन्दन करें। पथिक जी को स्वामी रामदेव जी ने और स्वामी आर्यवेश जी ने **ओ३म्** का पट्टा पहना कर सम्मानित किया और उन्हें मच पर स्थान देने के लिए कहा। इसके बाद पथिक जी मंच पर बैठे। हम जब

प्रातः गुरुकुल पहुंचे तो भोजन के पण्डाल में पंडित सत्यपाल पथिक जी अपने यशस्वी पुत्र श्री दिनेश जी के साथ नाश्ता करते हुए दिखाई दिये। हमने उनसे आशीर्वाद लिया। उन्होंने हमारे व परिवार के सदस्यों के हालचाल पूछे। उनसे बातचीत कर हमने भी नाश्ता किया। थोड़ी देर में हम यज्ञशाला की ओर आये और स्थान देखकर बैठ गये। उसके कुछ देर बाद आदरणीय पथिक जी भी वहां आये हमारे साथ बैठ गये। वहां भी उनसे कुछ बातें हुई। वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून के मंत्री श्री प्रेमप्रकाश शर्मा जी भी हमारे निकट ही बैठे थे। हमने यज्ञ व मंच आदि के चित्र लिये।

पं. सत्यपाल पथिक जी का सम्मान होने के बाद स्वामी रामदेव जी ने कहा कि आपके चेहरों पर सदा मुस्कान रहनी चाहिये। इसके बाद स्वामी जी ने ऋषि दयानन्द के चेहरे के भावों का किसी विद्वान लेखक द्वारा वर्णन किया। उन्होंने कहा ऋषि समुद्र की तरह भीतर से शान्त, बाहर से क्रियाशील, हिमालय की चोटियों में सबसे ऊंची चोटी पर बैठे हुए, ऐसे थे ऋषि दयानन्द। शायद इसी प्रकार के शब्द योगी अरविन्द जी ने भी कहे हैं। स्वामी जी ने पंथ निरपेक्षता की भी चर्चा की। उन्होंने कहा सेकुलरिज्म का किसी ने सच्चा दर्शन दिया है तो वह ऋषि दयानन्द ने दिया। ऋषि दयानन्द मनुष्य मात्र के प्रति कल्याण की भावना रखते थे। दूसरी बात स्वामी रामदेव जी ने यह बताई की सदा सर्वदा सबसे प्रीति किया करें। यह बात आप स्वामी दयानन्द जी से सीख लो। उन्होंने कहा कि स्वामी दयानन्द ने उन्हें जहर पिलाने वाले पाचक को भी माफ कर दिया था। अपने विषदाता को माफ करने वाला महर्षि दयानन्द दुनियां का अपूर्व मनुष्य था।

स्वामी जी ने कहा कि आर्यसमाज के लोगों की संख्या 4–5 करोड़ तो है ही। राजनीतिक दल आर्यसमाज की बात नहीं सुनते। उन्होंने कहा कि यदि आर्यसमाजी संगठित हों जायें तो राजनीतिक दल हमारी उपेक्षा नहीं कर सकेंगे। स्वामी जी ने कहा कि किसी भी संगठन में मतभेद हो सकते हैं। 'मुंडे मुंडे मतिभिन्ना' का उच्चारण किया। उन्होंने कहा कि किन्हीं विषयों पर मनुष्यों की मति अलग अलग हो सकती है। संगठन में सबको एक मन, मस्तिष्क व विचार वाला होना चाहिये। उन्होंने कहा कि हम वेद को मानते हैं। स्वामी जी ने संगठन सूत्र के दूसरे मंत्र **'ओ३म् सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्'** को पूरा बोल कर सुनाया। उन्होंने कहा कि ऋग्वेद का अन्तिम सन्देश **'संगठन–सूक्त'** है। **हममें संगठन व राष्ट्र निष्ठा होनी चाहिये। इसके लिए हमें व्यक्तिगत अहंकार को नीचे लाना पड़ेगा।**

स्वामी रामदेव जी ने कहा कि अभी कुछ दिन पूर्व गुरुकुल सम्मेलन के लिए स्वामी आर्यवेश जी हमारे यहां आये थे और उसके बाद दिल्ली सम्मेलन के लिए श्री सुरेश अग्रवाल जी व श्री विनय आर्य आदि कुछ लोग भी आये। मैंने उनसे संगठन के हित में मतभेद दूर कर एकता करने के लिये निवेदन किया। उन्होंने अपनी ओर से मुझे इस कार्य को करने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि आप जो कहेंगे हम उसे मानेंगे। उन्होंने कहा कि स्वामी आर्यवेश जी तो इसके लिए तैयार हो जायेंगे। स्वामी अग्निवेश मंच पर उपस्थित थे। स्वामी रामदेव जी ने स्वामी अग्निवेश जी को इस कार्य के लिए अपनी स्वीकृति देने का अनुरोध किया। अग्निवेश जी ने इस पर ताली बजाई। स्वामी

जी ने कहा कि अग्निवेश जी ने ताली बजाकर अपनी स्वीकृति दे दी है। इस पर पूरे पण्डाल ने हर्षध्वनि की।

स्वामी रामदेव जी ने घोषणा की कि वह कोशिश करेंगे कि अक्तूबर, 2018 के दिल्ली आर्य महासम्मेलन से पूर्व हम सब एक हो जायें और उस सम्मेलन में हम सब एक साथ भाग लें। स्वामी रामदेव जी ने कहा कि हमारा जीवन दस, बीस अथवा पचास वर्ष का हो सकता है। हमारा राष्ट्र, हमारा धर्म व संस्कृति हमेशा रहेगी। स्वामी जी ने कहा कि हमारे कारण हमारे राष्ट्र का अहित नहीं होना चाहिये। उन्होंने अपना संकल्प प्रस्तुत करते हुए वेदमंत्र **'ओ३म् इन्द्रं वर्धन्तोऽप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्। अपघ्नन्तो अराव्णः।'** बोला। इसके बाद उन्होंने **'ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रन्तन्न आसुव'** का पाठ किया। उन्होंने कहा कि आप एक पल के लिए भी दुरित भावनाओं का आदर न करें। कभी अशुभ का आदर न करें। दुरित भावनाओं को अपने भीतर स्थान न दें। अपने वक्तव्य को विराम देते हुए उन्होंने कहा कि **यदि एक–एक व्यक्ति अपने आप को स्वामी दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द बना लें तो आर्यसमाज का कल्याण होगा।** वक्तव्य पूरा होने पर पंडाल जो हजारों लोगों से पूरा भरा हुआ था, सब ने स्वामी रामदेव जी के इस सुन्दर व प्रभावशाली संबोधन के लिए बहुत देर तक करतल ध्वनि की। इसके बाद मेघालय के राज्यपाल श्री गंगा प्रसाद जी का सम्बोधन हुआ। स्वामी रामदेव जी और राज्यपाल महोदय का मंच पर उपस्थित कुछ विद्वानों ने सम्मान किया। कन्याओं के द्वारा एक स्वागत गीत भी हुआ। इसके बाद स्वामी आर्यवेश, स्वामी विवेकानन्द सरस्वती तथा स्वामी यतीश्वरानन्द सहित हरिद्वार के विधायक के संबोधन हुए।

तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन 8 अगस्त को अनेक सफलताओं को लिये हुए समाप्त हुआ। अत्यधिक गर्मी के बावजूद इस सम्मेलन में बहुत बड़ी संख्या में ऋषिभक्त, गुरुकुलों की आचार्यायों और आचार्य तथा ब्रह्मचारिणियां और ब्रह्मचारी उपस्थित हुए। आर्यजगत के उच्च कोटि के संन्यासी व विद्वानों सहित केन्द्रीय मत्री श्री सत्यपाल सिंह, उत्तराखण्ड विधान सभा के सभापति श्री प्रेमचन्द अग्रवाल एवं पतंजलि योगपीठ के आचार्य बालकृष्ण जी भी उपस्थित हुए। स्वामी धर्मानन्द सरस्वती और स्वामी प्रणवानन्द जी के नेतृत्व में गुरुकुलों की समस्याओं पर विचार करने व उनकी उन्नति संबंधी विषयों पर निर्णय करने के लिए एक परिषद के गठन का प्रस्ताव पारित किया गया जो समय–समय पर बैठकें व गोष्ठियां आयोजित कर गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली की उन्नति के लिए कार्य करेगी। पुस्तकों, औषधियों एवं यज्ञ संबंधी पात्रों के भव्य स्टाल भी सम्मेलन के मुख्य पण्डाल के समीप लगे थे। सम्मेलन के तीनों दिन चार वेद के शतकों से यज्ञ हुआ और यज्ञ के अनन्तर विद्वानों और विदुषी आचार्याओं के उपदेश हुए और उन्हें सम्मानित किया गया।

हनुमान का बचपन

—श्री ईश्वरी प्रसाद 'प्रेम'

बालक हनुमान शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा की भांति बढ़ रहा था। क्रमशः दो, तीन, चार। बालक अब पांच वर्ष का था, किन्तु कोई भी उसे 8—10 वर्ष से कम का नहीं बताता, उसकी अलौकिक छवि और अद्भुत करनी सम्पूर्ण परिवारी—जनों और प्रजाजनों को मंत्रमुग्ध करने में समर्थ थी। अपने से काफी बड़ी आयु के उद्दण्ड और उच्छृंखल बालकों की वह मुष्टिका के एक ही प्रहार में बुद्धि ठिकाने ला देता, किन्तु निर्बल और सताये जा रहे बालकों की हिमायत करता। उसकी लम्बी 2 कूद और दौड़े देखकर सभी आश्चर्य निमग्न रह जाते पर इसके साथ ही बालक की विनय—शीलता तो अत्यधिक सम्मोहक थी।

माता—पिता ने ऋषि निर्देशानुसार एक परम पुनीत कर्त्तव्य के रूप में बालक को सद्गुणों से अलंकृत करने में अपनी पूरी शक्ति लगा दी थी। प्रातः ईश वन्दना के पवित्र मन्त्रों के अतिरिक्त उसे अनेकों सुन्दर सुभाषित वाक्य स्मरण कराये गये थे। बड़े और छोटों के साथ व्यवहार का शिक्षण उसे दिया गया था। माता अंजना सोने से पूर्व बालक को वीर पूर्वजों की कहानियाँ सुनाती। कमरे में थे राष्ट्रहित के लिए सर्वस्व अर्पण करने वाले वीर पुरुषों के चित्र और वैसा ही साहित्य। प्रातः ही बालक पवित्र वेद—मन्त्रों द्वारा प्रभु वन्दना कर माता—पिता और गुरुजनों का चरण स्पर्श एवं 'नमस्ते' निवेदन पूर्वक विनम्र अभिवादन करता और उनका आशीर्वाद प्राप्त कर प्रसन्नता लाभ करता। प्रजाजनों के साथ उसके व्यवहार की विनम्रता और शालीनता तो सर्वथा दर्शनीय थी।

हनुमान अपनी बाल—मण्डली के सरदार थे, किन्तु सभी के साथ व्यवहार इतना आत्मीयता पूर्ण कि किसी प्रकार के भेदभाव की छाया तक नहीं। अपने मधुर मन्द हास से तो वे सभी का हृदय हर लेते।

बाल वीर हनुमान अब आठवें वर्ष में प्रवेश किया चाहते हैं कि अनायास एक दिन महर्षि अगस्त्य राजभवन में पधारे। दम्पत्ति ने बड़े भक्ति—भाव और आन्तरिक श्रद्धा से गुरुदेव का आतिथ्य किया। वीर हनुमान भी अपनी बाल—मण्डली से छुट्टी ले तब तक आ पहुँचे। आते ही वह माताजी एवं पिताजी के चरणों का स्पर्श कर अभिवादन करे, इसके पूर्व ही माता का संकेत मिलने पर उन्होंने आगन्तुक महाराज के चरणों में माथा टेक दिया। महामुनि ने अपने प्यारे को हृदय से लगा लिया। स्वास्थ्य और सदाचार विषयक बालक की प्रगति और विकास से महर्षि बड़े सन्तुष्ट हुए। बालक की मेधा, मनोबल और आत्म—विलास का परिचय कई प्रश्नों के समुचित समाधान से पाकर ऋषिवर ने बालक के वेदारम्भ और यज्ञोपवीत संस्कार का प्रस्ताव किया।

"भगवन्! विशेष तो आप ही समझ सकते हैं। इसके इन सात वर्षों का एक—एक क्षण भी आपके द्वारा नियन्त्रित ही रहा है, पर भगवन्! आयु के आठवें वर्ष में यज्ञोपवीत क्षत्रिय कुमार के लिए क्या इसे अति शीघ्रता नहीं माना जाएगा?" देवी अंजना ने बड़े संकोच से विनम्रता पूर्वक निवेदन किया।

"पुत्री! तुम्हारा शास्त्र विषयक् ज्ञान देखकर मुझे अत्यधिक प्रसन्नता है। गृह्य सूत्रों की व्यवस्था के अनुसार क्षत्रिय कुमार का यज्ञोपवीत 11 वें वर्ष में होना चाहिए। यों तुम्हारा सोचना सामान्यतया उचित ही है। पर पुत्री! यह बालक तो—

'अप्रतश्चतुरो वेदः पृष्ठतो सशरो धनुः'

का मूर्तिमान प्रतीक है। यह बालक तो न केवल बल—विक्रम में अपने समय का अद्वितीय वीर सिद्ध होगा, किन्तु विद्या और पाण्डित्य के क्षेत्र में भी बेजोड़ प्रमाणित होगा। अतः ठीक इसकी आठवीं वर्ष गांठ के दिन इस बालक का वेदारम्भ एवं यज्ञोपवीत संस्कार हम स्वयं सम्पन्न करायेंगे।

प्रफुल्ल चन्द्र चाकी

–स्वामी यतीश्वरानन्द जी

खुदीराम बोस के साथी क्रान्तिकारी प्रफुल्ल चन्द्र चाकी का नाम भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास में अत्यन्त सम्मान के साथ लिया जाता है। मुजफ्फरपुर बम काण्ड में खुदीराम के साथी प्रफुल्ल चन्द्र चाकी का जन्म 10 दिसम्बर 1888 को बोगरा जिले (वर्तमान बांग्लादेश) के बिहारी गाँव में एक कायस्थ परिवार में हुआ था। इनके पिता राजनारायण तथा माता स्वर्णमयी थी। जब ये दो वर्ष के थे तो पिता का देहान्त हो गया तथा माता ने अत्यन्त कठिन परिस्थितियों में इन्हें पाला तथा पढ़ाई कराई। विद्यार्थी जीवन में आठवीं कक्षा में ही इनका परिचय स्वामी महेश्वरानन्द द्वारा स्थापित एक क्रान्तिकारी संगठन से हो गया। 1904 में 'बांधव समिति' नामक व्यायामशाला व राष्ट्रभक्ति के संगठन में शामिल होने के समय से ही ये खूब व्यायाम करते थे तथा राष्ट्रप्रेम की भावना इनमें कूट–कूट कर भरी थी। रंगपुर जिला स्कूल में पढ़ते हुए उन्होंने 1905 के बंग–भंग आन्दोलन में छात्र प्रदर्शन आयोजित किये और कालाईल सर्कुलर (जो छात्रों के राजनीतिक प्रदर्शनों पर उन्हें निष्कासित कराने के लिए जारी किया गया था) के अन्तर्गत इन्हें स्कूल से निकाल दिया गया। जब ये रंगपुर नेशनल स्कूल आ गये तो इनका सम्पर्क क्रान्तिकारियों से हो गया। अरविन्द घोष के छोटे भाई बारीन्द्र कुमार घोष इनकी राष्ट्र–प्रेम की भावना से प्रभावित हुए और इन्हें कलकत्ता लाकर 'जुगान्तर' क्रान्तिकारी संगठन में शामिल कर लिया। 'जुगान्तर' में इनकी क्रान्ति ऊर्जा को नया आयाम मिला। वहाँ बम और पिस्तौल की ट्रेनिंग तथा राष्ट्रवादी साहित्य पढ़कर ये जल्दी ही संगठन के महत्त्वपूर्ण सदस्य बन गये।

इन्हें पूर्वी बंगाल और असम के पहले लेफ्टिनेंट गवर्नर जोसेफ बैम्फील्ड फुलर की हत्या का जिम्मा सौंपा गया पर इनका यह प्रयास असफल हो गया। 1908 में जब मुजफ्फरपुर के सत्र न्यायाधीश डगलस किंग्सफोर्ड को मारने की योजना 'जुगान्तर' समिति ने बनाई तो चाकी व इनके अनन्य मित्र खुदीराम को यह काम सौंपा गया। ये

मुजफ्फरपुर में एक धर्मशाला में दिनेश राय के छद्म नाम से रहे जबकि खुदीराम ने हरेन सरकार छद्म नाम रखा। 30 अप्रैल 1908 को यूरोपियन क्लब गेट के सामने किंग्सफोर्ड के बजाय कैनेडी परिवार की माँ—बेटी की हत्या के समय प्रफुल्ल खुदीराम के साथ थे। हत्या के बाद दोनों क्रान्तिकारी ने कुछ दूर साथ चलने के बाद अलग—अलग रास्तों से भागना ठीक समझा। रात में चलते—चलते प्रफुल्ल समस्तीपुर पहुँच गये जहाँ इनके लिए रेलवे स्टाफ के एक भारतीय अधिकारी त्रिगुणचरण घोष ने विश्राम तथा कपड़ों का प्रबन्ध किया और रात की ट्रेन से मोकम तक के टिकट का इंतजाम कर दिया। त्रिगुणचरण समझ गये थे कि यह युवक मुजफ्फरपुर बम काण्ड से जुड़ा है पर उन्होंने अपना राष्ट्रधर्म निभाया। दुर्भाग्य से ट्रेन कि जिस डिब्बे में प्रफुल्ल सफर कर रहे थे उसी में नंदलाल बनर्जी नामक सब इन्सपेक्टर भी छुट्टियाँ बिताकर लौट रहा था। समस्तीपुर रेलवे स्टेशन पर ही नंदलाल को प्रफुल्ल पर शक हो गया। उसने रेल में प्रफुल्ल से बातचीत का सिलसिला शुरू किया तो उसका शक पक्का हो गया। जब शिमुरईघाट स्टेशन पर प्रफुल्ल पानी पीन उतरे तो सब—इन्सपेक्टर ने मुजफ्फरपुर टेलीग्राम भेजकर 'दिनेश' को गिरफ्तार करने की इजाजत माँगी तो तुरन्त मिल गई। प्रफुल्ल ने मोकमघाट तक अपनी यात्रा पूरी की तथा हावड़ा जाने वाली ट्रेन में बैठने के लिए मोकमघाट रेलवे स्टेशन पर उतर गये। अचानक उन्होंने अपने साथी यात्री नन्दलाल को कई पुलिसवालों के साथ अपनी ओर तेजी से आते देखा। सारा मामला समझकर प्रफुल्ल ने नंदलाल पर गोली चला दी पर निशाना चूक गया। ब्रिटिश जेल में बन्द ना होने की शपथ खा चुके प्रफुल्ल ने एक गोली अपनी छाती पर व एक सिर में मार ली और वहीं प्राण त्याग दिये। इसके बाद ब्रिटिश सरकार ने अपने जघन्यतम अपराधों में से एक को अंजाम दिया। प्रफुल्ल के शव से सिर को काटकर एक थैले में रखकर सब—इन्सपेक्टर नंदलाल बनर्जी मुजफ्फरपुर लाया व अदालत में पेश किया। इस घृणास्पद कुकृत्य के लिए ब्रिटिश सरकार ने नंदलाल को नौकरी में तरक्की दी पर शीघ्र ही क्रान्तिकारियों ने उसकी हत्या कर उस अपराधी को वो ईनाम दिया जिसका वो हकदार था। चाकी के सिर को लॉर्ड सिन्हा रोड पर स्थित इन्टेलीजेंस ब्यूरों के ऑफिस के बाग में दबा दिया गया। बाद में ब्यूरो के एक अधिकारी ने इसे खुदवाया और लाल बाजार स्थित क्रिमिनल रिकार्ड रूम में भिजवाया। इतिहासकार अमलेन्दु डे ने इसे वहाँ देखा और सरकार से इस पर डी.एन.ए. टेस्ट करने की इजाजत माँगी ताकि यह सुनिश्चित हो सके के यह उसी महान् क्रान्तिकारी युवक का सिर है जो कट गया पर झुका नहीं, तथा इसे उचित सम्मान मिल सके पर सरकार ने इजाजत नहीं दी और बाद में अपुष्ट खबर आई कि वह सिर गायब हो गया है आजादी के बाद सरकारें अपने शहीदों को कैसे भुला देती हैं यह घटना इसका भी एक प्रमाण है।

पं. श्याम जी कृष्ण वर्मा

–स्वामी यतीश्वरानन्द जी

1914 में जब यूरोप पर विश्वयुद्ध के बादल मण्डरा रहे थे तो ब्रिटेन व फ्रांस के बीच मैत्री सन्धि पर हस्ताक्षर के लिए ब्रिटेन से किंग जॉर्ज पेरिस आने वाले थे। उन्हें बस एक एतराज था। पिछले पांच वर्षों से ब्रिटिश सरकार जिस भारतीय क्रान्तिकारी को ढूंढ रही थी और प्रत्यर्पण चाहती थी वह पेरिस में रहता था और उसे फ्रांस के उच्च राजनेताओं का समर्थन प्राप्त था। अपने मेजबान को किसी परेशानी से बचाने के लिए यह महान भारतीय क्रान्तिगुरु यूरोप के निष्पक्ष देश स्विटजरलैण्ड में जेनेवा चले गये।

आधुनिक भारत के पहले अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त राष्ट्रवादी क्रान्तिवादी पण्डित श्याम जी कृष्ण वर्मा का जन्म 04 अक्टूबर 1857 को गुजरात के कच्छ इलाके में माण्डवी कस्बे में हुआ था। पिता करसन नखुआ कॉटन प्रैस कम्पनी में मजदूर थे। जब श्याम जी ग्यारह वर्ष के थे तो माता गोमतीबाई की मृत्यु हो गई तथा दादी ने इन्हें पाला। आठवीं तक भुज में पढ़ाई करने के बाद इन्होंने 1873 में बम्बई के विल्सन हाईस्कूल में दाखिला लिया और संस्कृत सीखी। 1875 में भानुमति से इनका विवाह हो गया। तब ये राष्ट्रवादी समाज सुधारक और आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द के सम्पर्क में आये तथा उनके शिष्य हो गये। दयानन्द ने इनकी प्रतिभा को पहचाना तथा इन्हें बम्बई आर्य समाज का अध्यक्ष बनाकर सारे देश में वैदिक संस्कृति के प्रचार–प्रसार के लिए व्याख्यान–यात्रायें करने को कहा। इन्हीं व्याख्यानों के कारण 1877 में काशी के संस्कृतनिष्ठ विद्वानों ने इन्हें पंडित की उपाधि दी। काशी के ब्राह्मणों द्वारा पण्डित कहलाने वाले ये पहले गैर–ब्राह्मण थे। इनके संस्कृत ज्ञान व भारतीय संस्कृति के प्रति अनुराग को देखकर ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में संस्कृत के प्रोफेसर मोनियर विलियम्स ने 1878 में इन्हें अपना सहायक रख लिया।

श्याम जी इंग्लैण्ड आ गये और 25 अप्रैल 1879 को ऑक्सफोर्ड के बैलियोल कॉलेज में प्रोफेसर विलियम्स की सहायता से दाखिला ले लिया। 1881 में बर्लिन में आयोजित प्राच्यवादियों की कांग्रेस में इन्होंने भारत का प्रतिनिधित्व किया तथा 'भारत की जीवित भाषा के रूप में संस्कृत' शीर्षक से शोध पत्र प्रस्तुत किया। 1882 में बी.ए. पास कर इन्होंने वकालत की पढ़ाई शुरू कर दी। अगले वर्ष 'भारत में लेखन का उदय' विषय पर रॉयल एशियाटिक सोसायटी में व्याख्यान दिया तो इन्हें संस्था का अनिवासी सदस्य चुन लिया गया। 1884 में बार–एट–लॉ की उपाधि पाने पर ये ऑक्सफोर्ड से पढ़ने वाले पहले भारतीय

बन गये। साथ ही इंग्लैण्ड में शेयरों में भी इन्होंने खूब कमाई की।

1885 में भारत लौटाने पर इन्होंने बम्बई हाईकोर्ट में रजिस्ट्रेशन कराया और वकालत करने लगे। रतलाम के राजा के यहाँ मोटी तनख्वाह पर इन्हें दीवान का पद मिला, पर शीघ्र ही इन्हें खराब स्वास्थ्य के कारण पद त्यागना पड़ा। बहरहाल, इन्हें राजा से 32 हजार रुपये का सेवा लाभ मिला। बम्बई में कुछ समय स्वास्थ्य लाभ करने के बाद ये अजमेर में अपने गुरु महर्षि दयानन्द के कार्यालय के पास अजमेर में रहने लगे और वकालत करते रहे। इन्होंने अपनी कमाई को तीन कॉटन प्रैस मिलों में लगा दिया और जीवन भर के लिए आर्थिक रूप से स्वतन्त्र हो गये। 1893 से दो वर्ष के लिए उदयपुर के महाराजा के मंत्रीमण्डल में रहे और फिर जूनागढ़ के नवाब के यहाँ दीवान रहे।

तब तक ये विख्यात राष्ट्रवादी बन चुके थे। तिलक से इनकी गहरी मित्रता थी और कांग्रेस की 'प्रार्थना पत्र राजनीति' के ये घोर विरोधी थे। इसलिए जूनागढ़ के दरबार में अंग्रेज अधिकारियों ने इन्हें षडयन्त्र कर इस्तीफा देने पर मजबूर कर दिया। जब अगले वर्ष चापेकर बन्धुओं ने पूना में प्लेग कमीश्नर रैंड की हत्या की तो इन्होंने हत्या को सही ठहराया। भारत में पुलिस व प्रशासन की कठोरता को देख इन्होंने ब्रिटेन जाकर भारतवर्ष की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने का निर्णय लिया।

ब्रिटेन में इन्होंने हाइगेट, लन्दन में एक महंगा घर खरीदा जो भारतीय राष्ट्रवादियों का इंग्लैण्ड में केन्द्र बन गया। यहाँ तिलक, गोखले, गाँधी, लाला लाजपतराय और लेनिन जैसे नेता इनसे विचार–विमर्श करने आया करते थे। प्रसिद्ध समाजशास्त्री विचारक हर्बट स्पेंसर की मृत्यु पर इन्होंने उनके नाम पर लेक्चरशिप स्थापित करने के लिए ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में एक हजार पाउण्ड का दान दिया। अगले वर्ष 1904 में इन्होंने इंग्लैण्ड में अध्ययनरत भारतीय विद्यार्थियों के लिए दो हजार रुपये की छात्रवृत्ति की घोषणा की। साथ ही दयानन्द सरस्वती के नाम पर भी छात्रवृत्तियाँ घोषित की।

1905 में इन्होंने धर्म–राजनीति व समाज में सुधार के उद्देश्य से राष्ट्रवादी मासिक पत्र 'द इण्डियन सोशियोजिस्ट' निकालना शुरू किया। 18 फरवरी 1905 को इन्होंने राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिए 'इण्डियन होम रूल सोसायटी' की स्थापना की और एक जुलाई 1905 को 65 क्रोमवैल ऐवेन्यु, हाइगेट में इण्डिया हाउस की स्थापना की। इसमें भारत से आए 25 छात्रों के रहने, खाने व अध्ययन की सुविधा थी। 'इण्डिया हाउस' का उद्घाटन करते हुए ब्रिटेन के एक नेता हेनरी हिंडमैन ने कहा "ब्रिटेन से राजभक्ति भारत से गद्दारी है।" इण्डिया हाउस जल्दी की क्रान्तिकारियों को तपाने वाली भट्टी बन गया तथा मैडम कामा, वीर सावरकर, विरेन्द्र चट्टोपाध्याय, लाला हरदयाल, मदन लाल धींगड़ा जैसे क्राान्तिकारी यहाँ से निकलने लगे। जल्दी ही श्याम जी की गतिविधियों से ब्रिटिश सरकार चिन्तित हो गयी और ब्रिटिश प्रेस इनके विरुद्ध उठ खड़ी हुई। 1906 में सावरकर 'शिवाजी' छात्रवृत्ति पर इण्डिया हाउस पहुँचे और 1907 में श्यामजी ने सावरकर को इण्डिया हाउस

सौंप दिया। 1909 में जब धींगड़ा ने इंग्लैण्ड में कर्जन वाइली की हत्या की तो ब्रिटिश सरकार इनके पीछे पड़ गई। उसी वर्ष मैडम कामा ने स्टुटगार्ट (जर्मनी) में समाजवादियों के सम्मेलन में भारतवर्ष का झण्डा फहरा दिया। सरकार ने श्याम जी की वकालत की डिग्री छीन ली, इण्डिया हाउस सील कर दिया तथा इन्हें गिरफ्तार करने का प्रयास किया परन्तु ये तब तक पेरिस में रहने लगे थे और वहीं से अपने अखबार का प्रकाशन करते थे। ब्रिटिश सरकार फ्रांस से इनके प्रत्यर्पण की माँग करती रही और, जैसा कि पहले उल्लेख कर चुके हैं, 1914 के मध्य में विश्वयुद्ध से ठीक पहले ये जेनेवा चले गये तथा वहीं रहने लगे।

जेनेवा में प्रथम विश्व–युद्ध के समय इन्होंने स्विस सरकार द्वारा राजनीति पर रोक के चलते अपना समय शांति से बिताया। यहाँ प्रो–इण्डिया कमेटी के अध्यक्ष डॉ० ब्रीस इनके निकटस्थ रहे। बाद में इन्हें पता चला कि डॉ० ब्रीस एक ब्रिटिश जासूस था जिसे विश्व युद्ध के दौरान इन पर नजर रखने का काम सौंपा गया था।

विश्व युद्ध के बाद 1919 में जब लीग ऑफ नेशन्स की स्थापना हुई तो श्याम जी ने अमेरिकी राष्ट्रपति वुड्रो विल्सन के नाम पर लेक्चरशिप स्थापित करने के लिए दस हजार फ्रांक दान करने का प्रस्ताव किया पर ब्रिटिश दबाव में लीग ने इनका प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया। 1920 से इन्होंने छह वर्ष के अन्तराल के बाद फिर से 'द इण्डियन सोशियोलॉजिस्ट' का प्रकाशन शुरू किया। 1922 से ये बीमार रहने लगे और इन्हें प्रकाशन बन्द करना पड़ा। 30 मार्च 1930 को रात साढ़े ग्यारह बजे मातृभूमि से बहुत दूर जनेवा के एक अस्पताल में भारतवर्ष के इस क्रान्तिगुरु ने शरीर त्याग दिया। भारत में ब्रिटिश सरकार ने इनकी मृत्यु की खबर छुपाने का प्रयास किया पर लाहौर जेल में बंद भगत सिंह और उनके साथियों ने इन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। भारत की आजादी वे नहीं देख सके पर उन्होंने अपनी मृत्यु से पूर्व इसका प्रबन्ध किया कि उनकी व उनकी पत्नी की राख संभालकर सुरक्षित रखी जाए तथा देश के आजाद होने पर भारत लाई जाये। पेरिस निवासी एक भारतीय इतिहासकार डॉ० पृथ्वीन्द्र मुखर्जी ने तत्कालीन प्रधानमंत्री इन्दिरा गाँधी से उनके अस्थि–कलश भारत लाने की गुहार लगाई पर कोई लाभ नहीं हुआ। अन्ततः 22 अगस्त 2003 को गुजरात के मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र भाई मोदी को स्विस अधिकारियों ने क्रान्तिगुरु का अस्थि कलश भेंट किया और आजादी के पचपन वर्ष बाद उनकी स्वतन्त्रता की यात्रा पूरी हुई।

हिन्दू के हाथ का खाना खाकर अथवा पानी पीकर यदि मुसलमान या ईसाई, हिन्दू नहीं बनता तो मुसलमान अथवा ईसाई के हाथ का खाना खाकर अथवा पानी पीकर हिन्दू, मुसलमान अथवा ईसाई कैसे बन सकता है? सारे संसार ने हिन्दुओं का अन्न खाया है और हिन्दू भूखा ही मरता रहा। अब हमें सारे संसार का अन्न और जल ग्रहण करके भी हिन्दू ही बने रहने का संकल्प लेना होगा।

–वीर सावरकर

जमींदार की दो लड़कियाँ

—महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज

एक जमींदार की दो लड़कियाँ थीं। एक लड़की का विवाह किसान के साथ हुआ था और दूसरी लड़की एक कुम्हार के साथ विवाही गई थी। विवाह सम्पन्न हुए जब कुछ समय व्यतीत हो गया तब जमींदार की स्त्री ने कहा— "लड़कियों के सम्बन्ध में बहुत समय से कुछ नहीं सुना। उनकी अवस्था न जाने कैसी है? जाइए, जाकर लड़कियों का समाचार ले—आइए।"

जमींदार ने अगले ही दिन तैयारी की और लड़कियों के पास जा पहुँचा। पहले वह किसान के घर गया और लड़की से मिलकर कुशल—मंगल पूछा। लड़की ने कहा— "सब ठीक—ठाक है। खेत में बीज बोया हुआ है। आकाश में बादल भी छाये हुए हैं, परन्तु ये अब न बरसे तो हमारा कोई ठिकाना नहीं। पिछले वर्ष भी फसल नहीं हुई और यदि इस वर्ष भी सूखा पड़ गया तो फिर भूखों मरना पड़ेगा। पिताजी! कृपा करके वृष्टि होने के लिए प्रार्थना कीजिए, जिससे आपकी पुत्री नष्ट न हो।"

अब जमींदार वहाँ से उठा। वह दूसरी लड़की के पास गया, जो उसी गाँव के दूसरी ओर कुम्हार के घर में रहती थी। जमींदार ने लड़की के घर में प्रविष्ट होते ही कहा— "कहो बच्ची! अच्छी तो हो। सुनाओ, क्या हाल है?"

लड़की बोली— "पिताजी! अच्छी हूँ। सब ठीक—ठाक है, कुशल से हूँ, परन्तु देखो तो सही ऊपर ये कैसे काले—काले बादल आ गये हैं। आज ही आवे में कच्चे बर्तन डाले थे और आज ही आग लगाई है। यदि यह वृष्टि हो गई तो हमारी कुशल नहीं। पहला आवा खराब हो गया था और अबके बादल बरसा तो फिर भूखा ही मरना पड़ेगा। अब मिन्नतें माँग रही हूँ कि बादल न बरसे। आप भी प्रार्थना कीजिए की वृष्टि न हो और आपकी बेटी सूखपूर्वक जीवन व्यतीत करे।"

जमींदार अब अपने घर की ओर चला। जब घर पहुँचा तो उसकी पत्नी ने पूछा— "कहो! देख आये लड़कियों को? अच्छी तो हैं? बड़े उदास से दिखाई देते हो? क्यों कुशल तो है।"

जमींदार— हाँ, कुशल ही है, परन्तु एक बात है।

स्त्री— क्या, वह भी बताओ।

जमींदार— बस, यही कि एक अवश्य उजड़ेगी। इसके पश्चात् जमींदार ने विस्तार से बतलाया कि यदि वृष्टि हुई तो कुम्हार के घरवाली और यदि वर्षा न हुई तो किसान के घरवाली उजड़ेगी। दोनों का कुशलता से रहना कठिन है, क्योंकि एक की आबादी (बसने) से दूसरे की बरबादी है और एक की बरबादी से दूसरी की आबादी है।

यह एक मनोहर कहानी है, जो बड़ी सुन्दरता से इस बात को प्रकट करती है कि जो लोग दो नावों पर पाँव रखकर पार उतरना चाहते हैं, वे गलती पर हैं। मनुष्य का मन एक

ही ओर जाकर या तो मानव–जीवन को दुःखरूप बना देता है या सुखरूप कर देता है।

अन्तःकरण एक जमींदार है। उसकी दो लड़कियाँ वे दो वृत्तियाँ हैं, जो पुण्य की ओर और पाप की ओर ले जाती हैं। यदि अन्तःकरण दोनों वृत्तियों को बढ़ने देता है, तो वह आपत्ति में फँस जाएगा और दोनों उसे अपने प्रयोजन के लिए प्रयुक्त करने का प्रयत्न करेंगी, परन्तु यदि अन्तःकरण पुण्य की वृत्ति को ही बढ़ाएगा और पाप की वृत्ति को रोक देगा तो अन्तःकरण आनन्दित रहेगा और उसे किसी प्रकार की घबराहट का सामना नहीं करना पड़ेगा। बस, एक ओर हो जाओ! किंकर्तव्यविमूढ़ता में मत रहो। यह कहते हुए कि इस बार पाप की वृत्ति को बढ़ लेने दो, फिर पुण्य की वृत्ति को बढ़ा लेंगे। आप स्वयं नष्ट–भ्रष्ट हो जाएँगे। पाप की वृत्ति को तुरन्त रोक दो। इसी प्रकार से आपका अन्तःकरण शुद्ध होगा और आप सुखी हो जाएँगे।

सम्राट अशोक जब तक क्षात्र धर्म-पूजक, वैदिक धर्म का अनुयायी था, तब तक अर्थात् ईसा पूर्व 252 वर्ष तक, भारत की सेना शस्त्र-सज्ज और अजेय बनी रही। परन्तु अशोक द्वारा बौद्ध धर्म स्वीकार करते ही यह सम्पूर्ण शक्ति अकस्मात् ही धराशयी हो गयी।

-भारतीय इतिहास के छह स्वर्णिम पृष्ठ भाग-1, पृष्ठ-63

गुप्त रहस्य

—महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती

सुन्दर, मनोहारी बद्रिकाश्रम में सनत्कुमार आदि चारों ऋषि अभी आकर ठहरे ही थे कि उन्होंने नारदमुनि को चकित, दुःखी और चिन्ता में मग्न देखा। नारदमुनि और चकित हों। सचमुच यह आश्चर्य की बात थी। सनत्कुमार आगे बढ़े। नारद को पुकारा— नारद! यह क्या अवस्था बनी हुई है? किसलिए दुःखी हो रहे हो?

नारदमुनि ने कहा— "क्या पूछते हो? क्या दुनिया का रंग आपसे छिपा हुआ है? क्या आप नहीं जानते कि संसार में न सत्य रहा है, न तप रहा है, न कहीं दान है। यदि है भी तो सर्वथा उलटा, जिससे लाभ के स्थान पर हानि हो रही है। सभी मनुष्य आलसी, मूर्ख और नाना प्रकार के रोगों से पीड़ित हो रहे हैं। चहुँ ओर हाहाकार मचा हुआ है।"

मैंने देखा है और मेरी आँखों ने खून के आँसू बहाये हैं कि 'भक्ति' अपमानित और अनादृत हो रही है। भक्ति की ओर कोई ध्यान ही नहीं देता। यदि भक्ति कहीं दिखाई देती भी है तो वह केवल बाह्य टीप—टाप, झूठ और धोखा है। फिर और अन्याय देखिए कि भक्ति के प्रिय पुत्र ज्ञान और वैराग्य तो सर्वथा नष्ट हो गये हैं। ज्ञान और वैराग्य जो भक्ति के अत्यन्त आवश्यक अंग हैं, किसी के भी हृदय में दृष्टिगोचर नहीं होते। ज्ञान और वैराग्य के बिना शुष्क भक्ति व्यर्थ और निकम्मी है। तुलसीदासजी ने कैसी सुन्दरता से इस रहस्य को प्रकट किया है—

रैन का भूषण इन्दु है, दिवस का भूषण भानु।
दास का भूषण भक्ति है, भक्ति का भूषण ज्ञान।।
ज्ञान का भूषण ध्यान है, ध्यान का भूषण त्याग।
त्याग का भूषण शान्तिपद, तुलसी अमल अदाग।।

हे सच्चे ऋषियो! मेरा हृदय इस समय दुःख और चिन्ता से भरपूर है। संसार की ऐसी पीड़ित अवस्था देखी नहीं जा सकती है। मैं चाहता हूँ संसार में सच्ची भक्ति का प्रचार हो। लोग ईश्वर के सच्चे भक्त बने। इसी चिन्ता में मै चारों दिशाओं में घूम आया हूँ, परन्तु किसी ने भी तो तेरे हृदय को शान्ति नहीं दी। कोई भी मेरा सहायक सिद्ध नहीं हुआ। कहो ऋषियो! क्या आप भी मुझे निराश रखेंगे अथवा मुझे बताएँगे कि वे कौन—से सत्कर्म हैं, जिनसे भक्ति बढ़ सकती हैं।

ऋषियों ने नारदमुनि के इस प्रभावशाली प्रवचन को सुना। सनत्कुमार ने आगे बढ़कर नारदमुनि को हृदय से लगा लिया। धन्य नारदमुनि, धन्य हो जिसे भक्ति का इतना ध्यान है। सुनो! आज हम तुम्हें भगवान् को प्राप्त कराने वाली भक्ति का उपदेश करते हैं। जिससे न केवल भक्ति, ज्ञान और वैराग्य पूर्णरूप से प्राप्त होते हैं, प्रत्युत मुक्ति जैसा मीठा फल भी प्राप्त होता है।

हे नारद! जिसे द्रव्य आदि से किया जाए, वह 'द्रव्ययज्ञ' कहलाता है। जो ध्यान आदि द्वारा किया जाए, उसे 'ध्यानयज्ञ' कहते हैं और जिसे अग्निष्टोम की विधि से करते (शास्त्रार्थ के द्वारा ज्ञान को बढ़ाते) हैं, उसे

'ज्ञानयज्ञ' कहते हैं। ये समस्त यज्ञ कर्म के अनुसार (जैसा–जैसा किसी ने यज्ञ किया, उसी के अनुसार) स्वर्गादि फल देने वाले हैं। ऐसे श्रेष्ठ यज्ञों से केवल स्वर्ग ही मिलता है, मोक्ष नहीं। फिर कौन ऐसा सत्कर्म है जो शेष रह गया है। सुनो नारद! मोक्ष प्राप्ति की बुद्धि होकर, उसके द्वारा जो परमेश्वर की पूजा की जाती है, उसे ही विद्वान् लोग भक्ति कहते हैं। प्रश्न अभी मध्य में ही है कि वह मोक्ष–प्राप्ति की बुद्धि कहाँ से आये? इसके लिए विद्वानों ने कहा है कि **वेदाध्ययन के द्वारा स्वाध्याययज्ञ** करते हुए ऐसी बुद्धि प्राप्त होती है।"

हे नारद! यही सत्य कर्म है। यही स्वाध्याययज्ञ करते–करते तुम्हें सत्य कर्मों का ज्ञान हो जाएगा। भक्ति की बुद्धि स्वाध्याय से पैदा होती है। ज्ञान स्वाध्याय से उत्पन्न होता है। भक्ति सच्चे हृदय से हो तो ज्ञान के नेत्र खुल जाते हैं। यदि ज्ञान के नेत्र शास्त्र के अनुकूल खुल गये हैं तो वैराग्य का आनन्द प्राप्त होता है और यदि मन में पूर्ण रूप से वैराग्य उदय हो गया है तो मोक्ष की प्राप्ति होती है। यही उपदेश है। इसी का लोगों में प्रचार करो। लोगों को स्वाध्याय की ओर लगाओ, फिर वे स्वयमेव ईश्वर के भक्त बन जाएँगे।

विनम्र अनुरोध

प्रिय बन्धुओं,

आपको अवगत कराते हुए अति हर्ष हो रहा है कि तपोवन आरोग्यधाम का निर्माण कार्य पूर्ण हो गया है तथा चिकित्सा सेवायें भी धीरे–धीरे गति पकड़ रही हैं। यह सब आपके सहयोग और आशीर्वाद के कारण ही सम्भव हो पाया है। आप अवगत हैं कि आश्रम द्वारा आयोजित उत्सवों एवं शिविरों में सम्मिलित होने वाले सभी साधक–साधिकाओं की हार्दिक इच्छा रहती है कि उन्हें भी यज्ञ में सम्मिलित होने का अवसर प्राप्त हो जाये लेकिन कभी–कभी विपरीत मौसम के कारण शामियाना के नीचे स्थापित किये गये हवन कुण्डों पर यज्ञ करना सम्भव नहीं हो पाता क्योंकि वर्षा के कारण लगभग प्रतिवर्ष ही एक–दो दिन के लिए व्यवधान हो जाता है और मुख्य वेदी पर सभी यज्ञ प्रेमी सज्जनों को स्थान देना सम्भव नहीं हो पाता। इसलिए आश्रम के सम्मानीय अध्यक्ष जी तथा देहरादून के ही एक यज्ञ प्रेमी परिवार ने यह आग्रह किया है कि वर्तमान मुख्य यज्ञ वेदी के चारों ओर पक्का लिंटल डाल दिया जाये जिससे आंधी, तूफान और वर्षा में भी यज्ञ का कार्य निर्बाध रूप से चलता रहे। यज्ञशाला के विस्तारीकरण का कार्य जुलाई माह में प्रारम्भ करके 30 सितम्बर 2018 तक पूर्ण करने का प्रयास किया जायेगा। इस पुनीत कार्य को पूर्ण करने के लिए आपसे आर्थिक सहयोग की अपेक्षा है। आश्रम को दिया गया दान इन्कम टैक्स की धारा 80जी के अन्तर्गत कर मुक्त है। आपसे प्रार्थना है कि वैदिक साधन आश्रम के केनरा बैंक देहरादून के खाता संख्या 2162101001530, आईएफएससी कोड सीएनआरबी0002162 में दान राशि जमा कराकर आश्रम के कार्यालय में सूचित करने की कृपा करें ताकि आपको दान की रसीद भेजी जा सके।

निवेदक : इं. प्रेमप्रकाश शर्मा, सचिव, 9412051586

प्रार्थना

—वेदरत्न प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार

ओ३म् ओजोऽस्योजो मे दाः स्वाहा।। सहोऽसि सहो मे दाः स्वाह।। बलमसि बलं मे दाः स्वाहा।। आयुरस्यायुर्मे दाः स्वाहा।। श्रोत्रमसि श्रोत्रं मे दाः स्वाहा।। चक्षुरसि चक्षुर्मे दाः स्वाहा।। परिपाणमसि परिपाणं मे दाः स्वाहा।।

अन्वयार्थ— हे ईश्वर! (ओजः असि) तू ओजः स्वरूप है, (मे ओजः दाः) मुझे ओज दे, (स्वाहा) यह मेरी हार्दिक अभिलाषा है। हे जगदीश्वर! (सहः असि) तू सहःस्वरूप है, (मे सहः दाः) मुझे सहनशक्ति दे, (स्वाहा) यह मेरी हार्दिक कामना है। हे परमेश्वर! (बलम् असि) तू बलस्वरूप है (मे बलं दाः) मुझे बल दे, (स्वाहा) यह मेरी हार्दिक इच्छा है। हे सर्वेश्वर! (आयुः असि) तू आयुः स्वरूप है, (मे आयुः दाः) मुझे आयु—दीर्घायु प्रदान कर, (स्वाहा) यह मेरी हार्दिक विनती है। हे ईश! (श्रोत्रम् असि) तू श्रोत्रस्वरूप है, (मे श्रोत्रं दाः) मुझे श्रोत्र—श्रवणशक्ति प्रदान कर, (स्वाहा) यह मेरी हार्दिक याचना है। हे जगदीश! (चक्षुः असि) तू चक्षुः— स्वरूप है, (मे चक्षुः दा) मुझे चक्षुः प्रदान कर, (स्वाहा) यह मेरी हार्दिक प्रार्थना है। हे परमेश्वर, हे सर्वेश! (परिपाणम् असि) तू अपनी प्रजा का सब ओर से रक्षक है, (मे परिपाणं दाः) मुझे भी अपनी इन्द्रिय रूप प्रजा के रक्षण की सामर्थ्य प्रदान कर, (स्वाहा) यह मेरी हार्दिक अभ्यर्थना है।

हे ईश्वर! तुझ में ओज है, तुझ में तेज है, तुझ में वर्च है, अतः तू ओजस्वी है, तू तेजस्वी है, तू वर्चस्वी है। हे परमेश्वर! तू मुझे ओज दे, तू मुझे तेज दे, तू मुझे वर्च दे, ताकि मैं भी ओजस्वी बन सकूँ, तेजस्वी बन सकूँ, वर्चस्वी बन सकूँ।

हे ईश! तुझ में सह है, तुझ में सहन शक्ति है, तुझ में बाधाओं का डट कर सामना करने की सामर्थ्य है, अतः तू सहस्वान् है। तू सहनशील है, तू धैर्य से सब कुछ सहन करने वाला है। हे जगदीश! मुझे भी सहः दे, साहस दे, सहनशीलता दे, ताकि मैं भी सहस्वान् बन सकूँ, उन्नति के मार्ग में आने वाली बाधाओं का सामना कर सकूँ, सहनशील बन सकूँ धैर्य से सब कुछ सह सकूँ।

हे परमेश्वर! तुझ में बल है, शक्ति है, ताकत है, अतः तू बलवान् है, तू शक्तिमान् है, तू ताकतवर है। हे सर्वेश्वर! तू मुझे बल दे, शक्ति दे, ताकत दे, ताकि मैं भी बलवान् बन सकूँ, शक्तिमान् बन सकूँ, ताकतवर बन सकूँ।

हे दयानिधे! तुझ पे आयु है अर्थात् जीवनशक्ति है, अतः तू आयुष्मान् है, जीवनाधार है। हे कृपानिधे! तू मुझे आयु दे, जीवन दे, आयुष्य के साधन दे, ताकि मैं भी आयुष्मान् बन सकूँ, दीर्घायु हो सकूँ, चिरायु हो सकूँ।

हे आत्मन्! तुझ में श्रोत्र अर्थात् श्रवण सामर्थ्य है, तुझ में चक्षः अर्थात् दर्शन सामर्थ्य है, अतः तू श्रोता है, सुनने वाला है, और सबका तू द्रष्टा है, देखने वाला है। हे परमात्मन्! मुझे

श्रोत्र दे, चक्षु दे, ताकि मैं भी सुन सकूँ और देख सकूँ।

हे प्रभो! तुझ में परिपाण सामर्थ्य है, सब की रक्षा और पालन करने की सामर्थ्य है, तू परिपाण अर्थात् सब प्रजा का सब प्रकार से रक्षक है, पालक है। हे विभो! तू मुझे भी अपनी प्रजा का परिपालन करने की रक्षा तथा पालन–पोषण करने की सामर्थ्य दे, ताकि मैं भी तुझ सम परिपालक एवं परि रक्षक बन सकूँ।

हे जगदाधार! हे सर्वाधार! तुझ में ये सप्त विध सामर्थ्य इतनी अधिक है कि आप अपने तेज, साहस, सहनशीलता और बल आदि से सब संसार का आधार बनकर सबको संभाल रहे हो। आपमें सुनने, देखने की सामर्थ्य इतनी अधिक है कि तुम हर एक को सुन सकते हो और हर एक को देख सकते हो, तुझ में रक्षण और संरक्षण की, पालन–पोषण की सामर्थ्य इतनी दिव्य है कि सारा संसार तेरे रक्षण संरक्षण से ही चल रहा है। हे सर्वव्यापक एवं सर्वज्ञ! तू मुझे भी इन सप्तविध सामर्थ्यों से संयुक्त कर ताकि मैं भी तेजस्वी, साहसी, सहनशील, बलवान् और पुरुषार्थी होकर अपनी बाह्य वा भीतरी प्रजा को संभाल सकूँ। ऐसी श्रवण सामर्थ्य प्रदान करो कि उस प्रजा की सुन सकूं और देखभाल कर सकूं। ऐसी रक्षण–संरक्षण, की पालन–पोषण की शक्ति प्रदान करो कि उनके लिए सब प्रकार की सुख–सुविधाओं को जुटा कर उनका पालन–पोषण कर सकूँ।

प्रभुवर! मुझे इन सर्वविध सामर्थ्यों से सशक्त कर, खड़ा कर, समर्थ कर, उदार कर ताकि मैं भी आपके समान सबको खड़ा कर सकूँ, समर्थ बना सकूँ। प्रभुवर! यही है मेरी चाह, इसी में छिपी है मेरे जीवन की राह। यही है मेरी हार्दिक पुकार इसी में छिपा है सबका उपकार।

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिरो३म्।

समाचार–दिनांक 10 जुलाई 2018 राष्ट्रीय सहारा, देहरादून

देहरादून में रिस्पना नदी का पुल अब स्वामी दयानन्द सरस्वती पुल हुआ

देहरादून– हरिद्वार राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या–72 पर स्थित रिस्पना पुल का नाम बदल दिया गया है। यह पुल अब **''स्वामी दयानन्द सरस्वती''** के नाम से जाना जायेगा। यह जानकारी देते हुए अपर मुख्य सचिव उत्तराखण्ड सरकार श्री ओमप्रकाश जी ने बताया कि मुख्यमंत्री की घोषणा के अन्तर्गत देहरादून स्थित रिस्पना पुल का नाम परिवर्तन सम्बन्धी शासनादेश जारी कर दिया गया है।''

इस समाचार से उत्तराखण्ड के समस्त आर्य जनों में हर्ष की लहर दौड़ गई है। देहरादून के समस्त आर्यजनों ने माननीय मुख्यमंत्री श्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत जी तथा हरिद्वार (ग्रामीण) के विधायक माननीय श्री यतीश्वरानन्द जी का हार्दिक धन्यवाद किया है जिनके प्रयास से रिस्पना पुल का नाम स्वामी दयानन्द सरस्वती पुल रखा गया है।

ग्लोबल वार्मिंग के कारण

—श्री ओमप्रकाश भोला

1. प्रातः काल सड़कों पर झाडू लगाने के बाद मेहतर द्वारा सड़क के कूड़े जिसमें प्लास्टिक की पन्नी, कूड़ा—कचरा, सड़े गले गन्दे कपड़े, जूते व चप्पल आदि शामिल हैं उनके जलने की बदबू। ऐसा करके CO_2 व अन्य गैंसे वायुमण्डल में बढ़ रही हैं।

2. कहीं लेट्रीन के टैंकों से निकलने वाली गैस की गन्दी बदबू।

3. कहीं साईकिल के टायर, रबड़ की ट्यूब, कारों के टायर, डीजल के खाली डिब्बों और जलने की बदबू और विशेषकर सर्दी में तो बहुत अधिक— इससे उठने वाला काला धुंआ व बदबू जिसके कारण श्वास लेना भी मुश्किल हो जाता है।

4. कहीं हलवाइयों द्वारा सड़े हुए तेलों, घी व रिफाइंड तेल, अण्डे आदि के ठेले वालों द्वारा फैलाई गई बदबू।

5. कहीं अंडों के पकवान की बदबू, होटलों, रेस्टोरैन्ट में सड़ने वाले भोजन बड़ी—बड़ी दावतों के बाद बचे भोजन, पत्तल, प्लास्टिक के गिलास, प्लेट आदि से उठने वाली बदबू, मांस, मछली की बदबू।

6. कहीं कार पेन्टरों के द्वारा विभिन्न प्रकार के पेन्टस व थिनर आदि से निकलती बदबू, व गैसें आदि

7. कहीं पटाखों, ईंट के भट्टों, फर्श पर पड़ने वाले पत्थरों की कटाई आदि से उठने वाली धूल कण, कहीं खुदायी की मशीनों से उठने वाली धूल का गुब्बार ये सब श्वास लेने में कठिनाई पैदा करते हैं।

8. कहीं कार, मोटर, ट्रक, स्कूटर, टैम्पो, मोटर साईकिल आदि से निकलने वाले तेल CO_2, N_2 अन्य गैसों से उठी बदबू व धूल।

9. हवाई जहाजों, अस्पतालों में मरीजों व डाक्टरों द्वारा फैंका गया गन्द जैसे— प्लास्टर काटने के बाद फेंका गया कच्चा माल, कब्रों से उठने वाली बदबू, सड़क पर मरे जानवरों व पशुओं के सड़ने से बदबू—नालियों व नालों से उठने वाली बदबू, सब्जी मण्डी में सड़ने वाले फलों की बदबू।

हम सभी बदबू में जी रहे हैं यदि आप थोड़ी देर एकान्त में रहकर अपनी घर की छत पर या बालकोनी में बैठकर देखें तो आप इन बदबुओं को स्वयं महसूस करेंगे और पायेंगे कि आपको दिन में और रात्रि में सांस लेना कितना मुश्किल हो रहा है? परन्तु आपने उत्सव जैसे अष्टमी, दीवाली, दशहरा, एकादशी के दिनों में यह भी महसूस किया होगा कि जब उत्सब के दिन मुहल्ले के अन्दर विभिन्न घरों में होने वाले अग्नि द्वारा यज्ञ—हवन शुद्ध सामग्री से होते हैं तो गली—गली सुगन्धि से भर जाती है ऐसा आपने स्वयं महसूस किया होगा।

इस सुगन्धि में बहुत सी बदबू स्वतः ही

समाप्त हो जाती है। गोले (सूखे नारियल) के जलने से उठने वाली सुगन्धि तो रबड़ की बदबू, नाली आदि की गन्दी बदबू को स्वतः ही समाप्त कर देती है।

जब वातावरण में बहुत बदबू फैली हो जैसे फैक्ट्रियों की चिमनियों से निकलने वाली गैसों या शुगर मिल से उठने वाली गन्ने की खोई की बदबू, शीरे की बदबू, नालों से उठने वाली सडांद या घरों में लैट्रीन टैंकों की गैसों द्वारा बदबू से घर भर जाये तो थोड़ी भी शुद्ध सामग्री व नीम के पत्ते जलाकर धुंआ कर लेने से श्वास लेने में बहुत सुविधा या आसानी हो जाती है, बदबू भाग जाती है, यह अनुभूत प्रयोग है। जबकि प्रकृति तो स्वयं वातावरण को शुद्ध करने का गुण अपने में रखती है।

यज्ञ से ग्लोबल वार्मिंग का समाधान

यज्ञ के द्वारा वाष्पीकरण और वाष्पोत्सर्जन कराया जाता है जिससे वनस्पतियों, पौधों, पत्तियों में जल का संग्रह होता है वातावरण में भी नमी आती है जिससे वायुमण्डल के तापमान को यज्ञ के द्वारा कम किया जाता है।

यज्ञ ऐसे हरियाले वातावरण में किया जाता है जहाँ यज्ञशाला के चारों ओर वृक्ष हों, पौधे हों, और वर्षा करवाने के लिए किये गये यज्ञ के लिए घने वन क्षेत्रों का प्रयोग किया जाता है।

आज संसार में जो ग्लोबल वार्मिंग की बहुत चर्चा चल रही है हमारे प्राचीन ऋषियों (वैज्ञानिकों) ने शहरी क्षेत्रों में, सड़कों के किनारे, विद्यालयों, दफ्तरों व पार्कों आदि में पेड़–पौधों को लगाकर इसका समाधान कर दिया था। इस हरियाली से वातावरण का तापमान कम होगा और वातावरण में ऑक्सीजन के कारण शुद्धता भी बनी रहेगी तथा पेड़–पौधों से मिलने वाले लाभ से भी मानव लाभान्वित होंगे। भारत में जो प्रचुर मात्रा में बड़े–बड़े शहरों में हरियाली दिखाई देती है वह इसी कारण स्थापित की गयी थी। आज वैज्ञानिक भी इसी ओर सबका पुनः ध्यान आकर्षित करने में लगे हैं।

यज्ञ के द्वारा जहाँ बहुत सी समस्याओं का समाधान किया जा सकता है जहाँ ओजोन पर्त को ठीक करने के लिए, ग्लोबल वार्मिंग की समस्या से निजात पाने के लिए अर्थात् वायुमण्डल का तापक्रम कम करने और पर्यावरण प्रदूषण दूर करने के लिए यज्ञ को अपनाने के सिवाय अब कोई चारा अर्थात् रास्ता नहीं बचा, चाहे उसे आज अपने इस्तेमाल में लाओ चाहे पचास साल बाद। यज्ञ और योग ही इस दुनिया को सभी जटिल समस्याओं से छुड़ा सकते हैं, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है।

भयंकर आग और लावा

जंगलों में भयंकर आग लग जाती है, ज्वालामुखी पर्वतों से भयंकर लावा निकलता है, तथा अन्य भी कई प्रकार से यह पर्यावरण प्रदूषित होता है, जिसको कन्ट्रोल करने का तथा इन प्रकोपों द्वारा हुई हानि के बचाव का केवल मात्र एक ही साधन है, और वह है बड़े–बड़े यज्ञों का आयोजन। यह आयोजन सरकारी स्तर पर हों, तो निश्चय रूप से इस तरह की त्रासदियों से छुटकारा पाया जा सकता है और प्रकृति के सन्तुलन को सही रखा जा सकता है।

बच्चों के रोग-हकलाना-तुतलाना, कम हाईट, बिस्तर में पेशाब आदि का उपचार

—आचार्य संदीप पत्रे

1. बच्चे भस्त्रिका, कपालभाती, अनुलोम–विलोम आदि प्राणायाम करें।
2. मानसिक रोगों में ज्ञानमुद्रा, प्राणमुद्रा करें, व मेधावटी, मेधोहारी ले।
3. बच्चों को धूप में लिटाकर तेल मालिश करनी चाहिए, ताकि विटामिन डी मिले व दूध का पाचन अच्छा हो।
4. पेट में कीड़े– शिशु के पेट में कीड़े हो तो, कुछ दिनों तक खट्टे फलों का रस सेवन कराये। टमाटर व कागजी नींबू का रस सेवन कराये। स्नान से पहले धूप स्नान करे, बाद में जल स्नान करें। अजवायन व गुड़ मिलाकर गोली बनाये। दिन में तीन बार सेवन करे। बच्चों को अजवायन व काला नमक सेवन कराये। अजवायन को लस्सी/मट्ठे के साथ सेवन कर सकते हैं।
5. बच्चे का सिर दिन में 3–4 बार ठंडे पानी से धोये, उसके शरीर को तोलिये से पौंछ दे। ऐसा करने से चमड़ी के रास्ते से काफी विष बाहर निकलेगा व रोगप्रतिकारक शक्ति भी बढ़ती है।
6. शिशु को यदि बुखार हो जाये तो उसे दूध पिलाना बंद करे। उसे नींबू पानी ही गुनगुना करके पिलाते रहे, इससे बुखार उतर जायेगा।
7. छोटे बच्चों को यदि दस्त लगे तो, दूध में पिसी हुयी दालचीनी डालकर पिलाये, जरूर फायदा होगा। बड़े बच्चों को दुगनी मात्रा में दालचीनी दें।
8. बच्चों के लिए चीनी के बदले शहद का इस्तेमाल करना चाहिए, पेट स्वस्थ रहकर लीवर व हृदय ठीक से काम करेगा।
9. बच्चों की पेट की मासपेशियां कमजोर हो जाने पर कब्ज हो जाती है, अतः पेट की मालिश करे। पेट की मांसपेशियां सशक्त होकर कब्ज दूर होगा।
10. बच्चों को यदि वायु/गैस की शिकायत है तो, गुनगुने पानी में थोड़ा शहद व जरा सा नींबू रस मिलाकर बूंद दो बूंद उसे पिलायेगे तो उसे आराम होगा।
11. बच्चा अगर ज्यादा रोता हो तो उसके पेट में दर्द होता है। ऐसे में अमलतास का काला गुदा निकालकर पीसकर उसे बच्चों की नाभि की चारों ओर लेप करें, बच्चों को आराम मिलेगा।
12. बच्चे के ठुड्डी (हनुवटी) पर एक्युप्रेशर करे, उसके एडी के 4 इंज ऊपर मालिश करें, कब्ज दूर होगी साथ में सिर के पीछे उभरता है, उसका भी एक्युप्रेशर करें।
13. बहुत छोटे बच्चों को यदि कब्ज हो गई हो तो पान के पत्ते के डंठल (दाड़ी) को थोड़ा नारियल तेल लगाये, डंठल को बच्चे के गुदाद्वार में धीरे–धीरे enter कराये, तो बच्चा फौरन पोटी (शी) करेगा।
14. दही में शहद मिलाकर नन्हें बच्चों को चटाये, दांत निकलने में आसानी होगी।
15. छोटे बच्चे को ज्यादा दस्त होने पर, (चावल के दाने समान) 1–2 पत्ती केसर की थोड़े देशी घी में मिलाकर चटाये, आराम होगा।

16. दूध में कैल्शियम व फास्फोरस के रेशे समान मात्रा में पाई जाती है, जो कि एक अच्छा संयोग है। इसलिए दूध सर्वश्रेष्ठ है। दूध में विटामिन डी होता है, जो कैल्शियम व फास्फोरस का परिपाक/पाचन करता है, नहीं तो वे पच नहीं पाते।

17. बच्चों में चेचक/माता निकलने पर उसे कभी भी अंधेरे घर/कमरे में रखे, साथ में उसकी आँखों को सूरज की रोशनी से बचाये।

18. शिशु को कभी ज्यादा कपड़े न पहनाये, हमेशा प्राकृतिक वातावरण महसूस करने दे। सर्दियों में धूप से लिटाये व गर्मियों में नंग–धड़ंग रहने दे।

19. बच्चों को सफेद दाग है तो कायालम्प तेल से घिसे।

20. शिशु को माता के पास न सुलाये, क्योंकि माता द्वारा छोड़ी गई कार्बन डाई ऑक्साइड बच्चे के अंदर जाने का खतरा होता है।

21. बच्चों की पसलियां चलने का रोग तीन वर्ष से कम उमर के बच्चों को होता है इसमें बच्चों को गर्म पानी में थोड़ी हींग मिलाकर दो–दो घंटे बाद बच्चों को दे। तुलसी की पांच पत्ती व एक लौंग उबाले और वह पानी बच्चों को दे। (इस रोग में पसली के नीचे गढ्ढा बनता है, साँस तेजी से चलती है, छाती में दर्द एक बाजू से होता है। खाँसी, बुखार, नजला–जुकाम कम–ज्यादा होता है, खाँसी में बच्चा थूँक निगल लेता है) सरसों के तेल से पसली व छाती की मालिश करें।

22. अगर बच्चा उमर होने पर भी अपने पैरों पर नहीं चलता है तो रात को दो छुआरे भिगोकर सुबह उनको पीसकर दूध के साथ सेवन कराये। इससे बच्चों की नस–नाडियां सशक्त होती है व बच्चा स्वयं चलने लगता है। तिल के सूर्यतप्ती लाल तेल में केसर मिलाकर मालिश भी करें।

23. गुड़ बढ़ते बच्चों के लिए बेहद लाभदायक है। कैल्शियम व लोह प्रदान करता है।

24. बच्चों को मिट्‌टी खाने की आदत है तो उन्हें केला खिलाये।

25. बच्चों की नाभि के रास्ते आंत बाहर निकल आने को हार्निया या आंतवृद्धि कहते हैं। इसमें नाभि पर एक बुलबुला बनता है। इसमें बच्चों को पेट के बल पर सुलाये, इससे बुलबुला गायब होगा।

26. बच्चों में पतले/चिकने दस्त हो तो, 50 ग्राम जामुन छाल 2 गिलास पानी में उबाले। जब आधा रह जाये तो ठंडा करके चार–चार चम्मच 3–3 घंटे के अंतराल के बाद पिलाते रहे। चार दिनों में आराम होगा।

27. छोटे बच्चों को आधा शीशी दृष्टि ड्राप लेकर उतना ही गुलाब जल मिलाकर शीशी में भर ले। आँखों में 1–2 बूंद डाले, इससे आँखों में फायदा होगा।

28. गुलाब जल लेकर उस कांच की शीशी पर हरा सेलोफीन पेपर लगाये, 4–5 दिन धूप में लकड़ी पर रखे। ड्रॉप से आँखों में डाले।

29. बच्चों को तुतलाने/हकलाने में उज्जाई, सिंहासन, थायराइड पाईंट दबाये।

30. छोटे बच्चों में उल्टी, कमजोरी, ज्वर, दस्त आदि में कुमार कल्याण रस (1 ग्राम), सितोपलादि चूर्ण (20 ग्राम), अमृतासत् (10 ग्राम), प्रवाल पिष्टी (5 ग्राम) अभ्रक भस्म (5 ग्राम) गोदन्ति भस्म (5 ग्राम), संजीवनी वटी (10 ग्राम), त्रिकुट चूर्ण (5 ग्राम) आदि सबको मिलाकर इन सबकी 60, 10, 120 पुड़िया उम्र के हिसाब से बनाकर 1–1 पुड़िया माँ के दूध या शहद के साथ दें। अरविंदास 1–1 या 2–2 चम्मच उतने ही पानी के साथ उम्र के हिसाब से दें।

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन

नालापानी, देहरादून - 248008, दूरभाष: 0135-2787001

शरदुत्सव (यजुर्वेद यज्ञ एवं योग साधना शिविर)
आश्विन कृष्ण पक्ष नवमी से कृष्ण पक्ष त्रयोदशी विक्रमी सम्वत् 2075 तक
तदनुसार बुधवार 3 अक्टूबर से रविवार 7 अक्टूबर 2018 तक मनाया जायेगा।

यज्ञ के ब्रह्मा एवं योग साधना निदेशक- स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती

प्रवचनकर्ता	:	आचार्य उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी
वेद पाठ	:	महर्षि दयानन्द आर्ष ज्योर्तिमठ गुरूकुल पौंधा देहरादून के ब्रह्मचारियों द्वारा
यज्ञ एवं अन्य कार्यक्रमों के संयोजक	:	पं० सूरत राम शर्मा जी एवं श्री शैलेश मुनि सत्यार्थी, हरिद्वार
भजनोपदेशक	:	श्री नरेश दत्त आर्य, पं० सत्यपाल पथिक एवं श्री सुचित नारंग

बुधवार 3 अक्टूबर से रविवार 7 अक्टूबर 2018 तक प्रतिदिन

योग साधना	:	प्रातः 5.00 बजे से 6.00 बजे तक
संध्या एवं यज्ञ	:	प्रातः 6.30 बजे से 8.30 बजे तक
भजन एवं प्रवचन	:	प्रातः 10.00 बजे से 12.00 बजे तक
यज्ञ एवं संध्या	:	सायं 3.30 बजे से 6.00 बजे तक
भजन एवं प्रवचन	:	रात्रि 7.30 बजे से 9.30 बजे तक

ध्वजारोहण	- बुधवार3 अ क्टूबर2 018क ोप्रातः9 :00ब जे।
योग सम्मेलन	- बुधवार3 अ क्टूबर2 018क ोप्रातः1 0स े1 2ब जेत क
तपोवन विद्या निकेतन जू.हा. स्कूल का वार्षिकोत्सव	- गुरूवार4 अ क्टूबर2 018क ोप्रातः1 0:00ब जेस े1 :00ब जेत क
महिला सम्मेलन	- शुक्रवार5 अ क्टूबर2 018क ोप्रातः1 0:00ब जेस े1 :00ब जेत क
संयोजिका	- श्रीमतीस रोजअ ग्निहोत्री(दिल्ली)
उद्बोधन	- डॉ.अ न्नपूर्णा,ड ॉ.स ुखदास ोलंकी,श्र ीमतीस ुरेन्द्रअ रोड़ाए वंश्र ीमतीस रोजअ ार्याज ीअ ादि
शोभायात्रा	- शनिवार6 अ क्टूबर2 018क ोप्रातः1 0ब जेत पोभूमिक ेि लयेश ोभायात्राज ायेगी
संयोजक	- श्रीम ंजीतर्ि संहज ी
भजन संध्या	- शनिवार6 अ क्टूबर2 018क ोर ात्रि8 ब जेस े1 0ब जेत क
भजनोपदेशक	- श्रीमतीम ीनाक्षीप ंवार,श्र ीन रेशद त्तअ ार्यज ीए वंम ास्टरउ त्कर्षअ ग्रवाल
समापन समारोह	- रविवार 7 अक्टूबर 2018 को पूर्णाहुति के उपरान्त ऋषिलंगरक ाअ ायोजनह ै।

नोट : यज्ञ में सम्मिलित होने वाले सभी आर्य बन्धु अपने साथ सफेद/पीली धोती एवं कुर्ता अवश्य लायें तथा बहने पीले रंग की धोती साथ में लायें।

बस सेवा: रेलवे स्टेशन से तपोवन आश्रम नालापानी के लिए हर समय बस उपलब्ध रहती है।

सप्रेम आमंत्रण

आदरणीय महोदय/महोदया, स्व. बाबा गुरुमुख सिंह जी एवं पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती जी, स्वामी योगेश्वरानन्द जी परमहंस एवं महात्मा प्रभु आश्रित जी ने तपोवन आश्रम को साधना के लिए सर्वश्रेष्ठ स्थान माना था। आपसे प्रार्थना है कि परिवार व ईष्ट मित्रों सहित यज्ञ एवं सत्संग में उपस्थित होकर हमें कृतार्थ करें एवं अपने-अपने समाज/धार्मिक सत्संगों से यह निमंत्रण हमारी ओर से निवेदित करने की कृपा करें। आपके उदार सहयोग के लिए अग्रिम धन्यवाद।

निवेदक

दर्शन कुमार अग्निहोत्री, ई. प्रेम प्रकाश शर्मा, स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती, आचार्य आशीष जी, सुधीर कुमार माटा, मंजीत सिंह, विक्रम बावा, योगेश मुंजाल, डॉ. शशि वर्मा, मनीष बावा, महेन्द्र सिंह चौहान, योगराज अरोड़ा, विजय कुमार, रामभज मदान, विनीश अहूजा।

एवं समस्त सदस्य, वैदिक साधन आश्रम सोसायटी

वैदिक साधन आश्रम तपोवन नालापानी, देहरादून दानदाताओं की सूची

क्र.स.	नाम	धनराशि
1.	श्री एन.के. अरोड़ा, दिल्ली	1100
2.	श्रीमती धर्म देवी, दिल्ली	1100
3.	श्री ओम प्रकाश अरोड़ा, जालन्धर	1100
4.	श्री ब्रह्म पाल सिंह, रुड़की	500
5.	माता सुरेन्द्र अरोड़ा, देहरादून	2100
6.	श्री प्रदीप दत्ता, देहरादून	2000
7.	श्री संजय चौहान व श्रीमती रश्मि चौहान, देहरादून	5000
8.	श्री सुखबीर सिंह वर्मा, सुभाषनगर	1100
9.	मैसर्स चानन राम, अमरनाथ, कालावाली	1500
10.	श्री कृष्णा कुमार बंसल, राजपुरा	1100
11.	श्री ईश्वर चन्द अरोड़ा, गुरुग्राम	1100
12.	श्री गोविन्द सिंह भण्डारी, बागेश्वर	1100
13.	श्री वेद प्रकाश गौतम, हरिद्वार	4300
14.	श्री हरबंस लाल, भिवानी	5100
15.	माता नरेन्द्र बब्बर, तपोवन	2500
16.	श्री श्याम सुन्दर सोनी, गुरुग्राम	15000
17.	श्री रणजीत राय कपूर, देहरादून	1001
18.	श्री रुवेल सिंह आर्य, यमुनानगर	1200
19.	श्री सुरेन्द्र सिंह, हलदौर	1000
20.	श्री केवल सिंह आर्य, पानीपत	1200
21.	श्रीमती रेणु भसीन, लखनऊ	1100
22.	श्री राम प्रसाद श्रीवास्तव, लखनऊ	1100
23.	श्री देशराज आर्य, आगरा	2888
24.	आचार्य हुकम सिंह भारती, आगरा	2100
25.	श्री सतवीर नागर, दिल्ली	2100
26.	माता सुरेन्द्र अरोड़ा, देहरादून	5000
27.	श्री प्रेमदत्त उनियाल, देहरादून	2300
28.	श्री गोविन्द राम गुप्ता, फरीदाबाद	2000
29.	श्री प्रेमलता गुप्ता, फरीदाबाद	2000
30.	श्री अनुराग गुप्ता, फरीदाबाद	2000
31.	श्रीमती पूनम गुप्ता, फरीदाबाद	2000
32.	श्री पराग गुप्ता, फरीदाबाद	2000
33.	श्रीमती मोनिका गुप्ता, फरीदाबाद	2000
34.	वंशिका गुप्ता, फरीदाबाद	2000
35.	पुष्पा गुप्ता, फरीदाबाद	2000
36.	श्री विभोर गुप्ता, फरीदाबाद	2000
37.	श्रीमती प्रेमलता गुप्ता, फरीदाबाद	150000
38.	वेदाली गुप्ता, फरीदाबाद	2000
39.	श्री रोहित खट्टर, फरीदाबाद	2000
40.	श्रीमती प्रेम खट्टर, फरीदाबाद	2000
41.	अंजना पुरी, फरीदाबाद	1100
42.	श्रीमती प्रेम खट्टर, फरीदाबाद	1100
43.	श्रीमती वीना धवन, दिल्ली	2000
44.	श्री पुनीत गाबा, दिल्ली	2000
45.	श्री एस.के. गाबा, दिल्ली	2000
46.	श्रीमती राजकरनी अरोड़ा, फरीदाबाद	2000
47.	श्री आई.जे. गिरधर, फरीदाबाद	2000
48.	श्रीमती चन्द्रकान्ता गिरधर, फरीदाबाद	1100
49.	श्रीमती प्रोमिला मेहन्दे, फरीदाबाद	2100
50.	श्रीमती मनुहिता गुप्ता, मुम्बई	2000
51.	श्रीमती शान्ता मित्तल, हिसार	2000
52.	श्री प्रेम कुमार गुप्ता, सूरत,	2000
53.	श्री अशोक गुप्ता, हिसार	2000
54.	श्रीमती विमला बंसल, सूरत	2000
55.	श्री सुशील गुप्ता, यू.एस.ए.	2000
56.	श्रीमती कुसुम आर्य, यू.एस.ए.	2000
57.	श्री सर्वेश गुप्ता, सूरत	2000
58.	श्रीमती रीतु गुप्ता, सूरत	2000
59.	श्री पंकज गुप्ता, कनाडा	2000
60.	श्रीमती प्रीति गुप्ता, कनाडा	2000
61.	श्री सुरेन्द्र गुप्ता, फरीदाबाद	2000
62.	श्रीमती सुनीता गुप्ता, फरीदाबाद	2000
63.	श्री प्रहलाद गुप्ता, फरीदाबाद	2000

Delite
KOM
freedom to work...
DELITE KOM LIMITED
All dimensions are subject to change without any prior notice because of continuous research & development. All designs shown here are proprietary: Any infringement is liable for prosecution.
Delite
KOM
DELITE KOM LIMITED
Kukreja House, IInd Floor, 46, Rani Jhansi Road, New Delhi-110055
Ph. : 011-46287777, 23530288, 23530290, 23611811 Fax : 23620502 Email : delite@delitekom.com
DNV
CERTIFIED

डाक पंजीयन UA/DO/DDN/75/2018-2020 समाचार पत्र पंजीयन 51900/88

With Best Compliments From MUNJAL SHOWA

हाई क्वालिटी शॉकर्स

TPM Certified

ISO / TS - 16949 - 2002 Certified

ISO - 14001 Certified

OHSAS - 18001 Certified

हमारे उत्पाद

- स्ट्रट्स / गैस स्ट्रट्स
- शॉक एब्जॉर्बर्स
- फ्रन्ट फोर्क्स
- गैस स्प्रिंगस / विन्डो बैलेन्सर्स

मुंजाल शोवा लिमिटेड भारत की प्रमुख शॉक एब्जॉर्बस बनाने वाली कंपनी है जिसकी रेंज फ्रन्ट फोर्कस, स्ट्रट्स (गैस चार्जड और कन्वेन्शनल) और गैस स्प्रिंगस की टू व्हीलर / फोर व्हीलर उद्योगों को उपलब्ध कराती है। कंपनी गुणवत्ता और सुरक्षा के उच्चतम मानकों के अनुरूप अपने सभी उत्पादों का निर्माण करती है। कंपनी के उत्पाद आरामदायक और सुरक्षित सवारी देते हैं और ये टिकाऊ और विश्वसनीय भी हैं। मुंजाल शोवा लिमिटेड, QS 9000, TS–16949, ISO 14001, OHSAS 18001 और TPM प्रमाणित कंपनी है। मुंजाल शोवा के तीन मैन्युफैक्चरिंग प्लॉट हैं – गुड़गाँव, मानेसर (हरियाणा) और हरिद्वार (उत्तराखण्ड)। मुंजाल शोवा लिमिटेड का शोवा कार्पोरेशन जापान के साथ तकनीकी और वित्तीय सहयोग करार है।

हमारे ख्यातिप्राप्त ग्राहक

Hero HONDA HONDA MARUTI SUZUKI YAMAHA

मुंजाल शोवा लिमिटेड

प्लॉट नं. 9–11, मारुति इंडस्ट्रियल एरिया
गुड़गाँव–122015, हरियाणा
दूरभाष :
0124–2341001, 4783000, 4783100
ईमेल : msladmin@munjalshowa.net
वेबसाइट : www.munjalshowa.net

MUNJAL SHOWA

वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी के लिए प्रकाशक मुद्रक प्रेम प्रकाश द्वारा सरस्वती प्रेस, 2, ग्रीन पार्क, निरंजनपुर, देहरादून–248001 (उत्तराखण्ड) से मुद्रित एवं वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी (रजि.), नालापानी, देहरादून (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित। संपादक– कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री

सरस्वती प्रेस, देहरादून, ई-मेल : akhilg333@gmail.com